MT MUMBAI TARANG™

मुंबई तरंग

www.mumbaitarang.com

RNI No. MAHHIN/2020/78591
Postal Reg. No. MNW/354/2020-2022

संपादक : दिलीप नानजीभाई पटेल | उप संपादकः किरीट अमृतलाल चावड़ा ❖ वर्ष-02 ❖ अंक-37 ❖ मुंबई ❖ रविवार 05 से 11 सितंबर 2021 ❖ पृष्ठ-8 | ₹4/-

पराजय तब नहीं होती...
जब आप गिर जाते हैं.
पराजय तब होती है...
जब आप
उठने से इनकार कर देते है.

जय श्री राम
Yogi 8156045100 8401376537
Bimal Patel 8401886537
YOGI PROPERTY DEALER
Row House, Flats, Shop, Plot, Bunglows
PURCHASE, SALE & RENT
B-Mark Point, Dindoli Bus Stop, Near SBI Bank, Dindoli, Surat

पेज 3
अनिल देशमुख के वकील की गिरफ्तारी पर नवाब मलिक ने उठाए सवाल

पेज 5
बताइए, कितनों को दिलवाई सजा, कितने केस पेंडिंग', CBI का रिपोर्ट कार्ड तैयार करेगा सुप्रीम कोर्ट

पेज 7
फ़िल्म "स्ट्रीट लाइट" तेलुगु और हिंदी में सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार

पेज 8
डॉ कृष्णा चौहान ने एक्ट्रेस तनीषा मुखर्जी को लीजेंड दादा साहेब फाल्के अवार्ड 2021 देकर किया सम्मानित

महाराष्ट्र में ओबीसी के लिए इम्पीरिकल डेटा तैयार करने पर सहमति, सर्वदलीय बैठक में लगी मुहर

मुंबई, ओबीसी समाज को राजनीतिक आरक्षण देने के लिए महाराष्ट्र की उद्धव सरकार इम्पीरिकल डेटा तैयार करेगी। शुक्रवार को हुई सर्वदलीय बैठक में यह निर्णय लिया गया। बैठक में यह भी मांग की गई कि जब तक ओबीसी राजनीतिक आरक्षण का निर्णय नहीं ले लिया जाता, तब तक राज्य में स्थानीय निकाय के चुनाव नहीं कराए जाएं। यह डेटा राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग तैयार करेगा। इस मसले को लेकर शुक्रवार को सरकारी अतिथि गृह सह्याद्री में सर्वदलीय बैठक हुई। यह दूसरी बैठक है। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में हुई बैठक में ठाकरे सरकार के कैबिनेट मंत्रियों के अलावा राज्य के सभी दलों के प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक के बाद बीजेपी नेता देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि हमने मांग की कि ओबीसी समाज को जब तक राजनीतिक आरक्षण नहीं दिया जाता, तब तक स्थानीय निकाय संस्थाओं के चुनाव न कराए जाएं। बैठक में यह तय किया गया कि राज्य पिछड़ा वर्ग को तत्काल इम्पीरिकल डेटा जमा करने को कहा जाए। जब तक यह काम नहीं हो जाता, तब तक चुनाव नहीं कराए जाए। जिन तीन से चार जिलों में इसका सबसे ज्यादा

प्रभाव होगा, वहां के लिए फिर से पहले वाली स्थिति लाने पर सरकार विचार करें। इस तरह दो-तीन मुद्दों पर हमने चर्चा की और सभी पर सहमति बनाई।

केंद्र को देना चाहिए इम्पीरिकल डेटा: भुजबल बैठक में उपस्थित मंत्री छगन भुजबल ने केंद्र सरकार द्वारा इम्पीरिकल डेटा देने की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि यदि केंद्र सरकार ने इम्पीरिकल डेटा दिया, तो समस्या का हल हो सकती है। इस बारे में हमने सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष रखा है। सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने तक हम 50 फीसदी तक चुनाव करा सकते हैं? क्या इस पर कोई निर्णय लिया जा सकता है ? इस पर विचार किया जा रहा है। क्या हम तीन चार महीनों में इम्पीरिकल डेटा एकत्रित कर सकते हैं? इसके लिए हम आयोग से चर्चा करेंगे। यह डेटा उपलब्ध होने तक चुनाव स्थगित किया जा सकता है? इस संबंध में चर्चा भी चल रही है।

चुनाव टालना पड़े तो टाल दें: पटोले कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले ने कहा कि अगर चुनाव दो से तीन महीने के लिए टालना पड़े तो उन्हें टाला जाए, लेकिन जब तक ओबीसी का राजनीतिक आरक्षण तय नहीं हो जाता तब तक स्थानीय निकाय चुनाव नहीं होने चाहिए। कांग्रेस पार्टी किसी भी अस्थायी व्यवस्था के खिलाफ है। बैठक में विधान परिषद में विपक्ष के नेता प्रवीण दरेकर, मंत्री विजय वडेट्टीवार, अशोक चव्हाण, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले आदि नेता उपस्थित थे। इसके पहले 27 अगस्त को इस मामले पर सर्वदलीय बैठक का आयोजन किया गया था।

मुंबई को मिली एक और चौपाटी!

माहिम बीच बना आकर्षण का केंद्र

मुंबई, माहिम समुद्र तट का सौंदर्यीकरण कर इसे पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाने की पर्यावरण मंत्री आदित्य ठाकरे की संकल्पना गुरुवार को पूरी हुई। मुंबई की इस ऐतिहासिक चौपाटी को नए सिरे से नया रंग-रूप दिया गया है। पर्यटकों और मुंबईकरों के लिए यह आकर्षण का केंद्र साबित होगा। आदित्य ठाकरे ने गुरुवार को इस चौपाटी (बीच) के सौंदर्यीकरण परियोजना का उद्घाटन किया। इस बीच पर सुंदर वृक्ष, दीवारों पर पेंटिंग, लकड़ी के खिलौने, व्यूइंग टॉवर, जिम और बैठने की जगह बनाई गई है। इसे देखकर हर किसी का मन मुग्ध हो जाएगा, ऐसा विश्वास पर्यावरण मंत्री आदित्य ठाकरे ने व्यक्त किया। इस अवसर पर मुंबई की महापौर किशोरी पेडणेकर, स्थानीय विधायक सदा सरवणकर, स्थानीय नगरसेवक मिलिंद वैद्य, जी-नॉर्थ वार्ड के सहायक आयुक्त किरण दीघावकर आदि मान्यवर उपस्थित थे।

तालिबान की वापसी पर जश्न मनाने वाले मुसलमानों पर भड़के नसीरुद्दीन शाह

मुंबई, अफगानिस्तान पर तालिबान ने हाल ही में कब्जा कर लिया है। अब यहां तालिबान की हुकूमत हो गई है। क्रूर तालिबानियों की हुकूमत आने पर हिंदुस्थान में कुछ लोगों ने इसका समर्थन करते हुए जश्न भी मनाया। हिंदुस्थान में रहकर इन क्रूर तालिबानियों का समर्थन करनेवाले मुसलमानों पर बॉलीवुड के अभिनेता नसीरुद्दीन शाह भड़क उठे हैं। अपनी तीव्र प्रतिक्रिया का एक वीडियो शेयर करते हुए उन्होंने कई अहम सवाल भी खड़े किए हैं। उन्होंने भारतीय मुसलमानों से पूछा कि, धर्म में रिफॉर्म चाहिए या सदियों पुराना वहशीपन? सोशल मीडिया पर एक वायरल वीडियो में नसीरुद्दीन शाह ने कहा है कि अफगानिस्तान में

तालिबान का दोबारा हुकूमत पाना पूरी दुनिया भर के लिए चिंता की बात है, इससे भी खतरनाक है हिंदुस्थानी मुसलमानों का उन वहशियों की वापसी पर जश्न मनाना। आज हर हिंदुस्थानी मुसलमान को अपने आप से ये सवाल पूछना चाहिए कि उसे अपने मजहब में सुधार और आधुनिकता चाहिए या वो पिछली सदियों के वहशीपन के साथ रहना चाहते हैं। हिंदुस्थानी इस्लाम दुनिया से अलग इतना ही नहीं एक्टर ने आगे कहा है कि मैं भी हिंदुस्थानी मुसलमान हूं और जैसा कि मिर्जा गालिब कह गए हैं, 'मेरा रिश्ता अल्लाह मियां से बेहद बेतकल्लुफ है, मुझे सियासी मजहब की कोई जरूरत नहीं है।' ऐसे में हिंदुस्थानी इस्लाम हमेशा दुनिया भर के इस्लाम से अलग रहा है और खुदा वो वक्त न लाए कि वो इतना बदल जाए कि हम उसे पहचान भी न सकें। विवादों से है पुराना नाता इस वीडियो पर जहां कुछ यूजर्स नसीर की तारीफ करते दिख रहे हैं तो वहीं, कुछ ट्रोल भी कर रहे हैं। गौरतलब है कि अगस्त के महीने में तालिबान ने अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया है। इसके बाद भारत के कुछ मुस्लिम संगठनों ने अफगानिस्तान पर तलिबान के कब्जे को सही ठहराया और इस पर खुशी जाहिर की। नसीरुद्दीन शाह जितने नायाब एक्टर हैं, उतने ही बेबाक हैं, वह समय-समय अपने विचार हर एक मुद्दे पर रखते रहते हैं।

उत्तर प्रदेश, गुजरात पर मेहरबान, महाराष्ट्र को मिले कम टीके

मुंबई, तीसरी लहर की पृष्ठभूमि पर बड़ी संख्या में स्वास्थ्य कर्मी और प्रटलाइन वर्कर्स वैक्सीन की दूसरी खुराक की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसे देखते हुए महाराष्ट्र सरकार ने केंद्र से तीन करोड़ टीके की मांग की है। लेकिन केंद्र सरकार टीके के बंटवारे में दोहरी नीति अपना रही है। केंद्र की भाजपा सरकार अपने शासित राज्य उत्तर प्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों पर मेहरबान होकर वहां बड़ी मात्रा में वैक्सीन की आपूर्ति कर उन पर रहम कर रही है, और गैर भाजपा शासित राज्य केरल और महाराष्ट्र पर सितम ढा रही है यानी मांग के अनुसार उन्हें वैक्क्सीन की आपूर्ति कम कर रही हैं। इस बात को लेकर विशेषज्ञों ने तीव्र नाराजगी व्यक्त की है। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मुख्य सचिव सीताराम कुंटे और अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्वास्थ्य) डॉ. प्रदीप व्यास के साथ २६ अगस्त को बैठक हुई थी। बैठक में राज्य के सक्रिय मरीजों की संख्या व टीकाकरण क्षमता की जानकारी देते हुए राज्य के लिए ३ करोड़ टीकों की जरूरत बताई गई थी। केंद्र सरकार ने केवल दो करोड़ वैक्सीन की आपूर्ति का वादा किया है। इससे पहले मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने भी केंद्र से राज्य के लिए अतिरिक्त वैक्सीन की मांग की थी। उत्तर प्रदेश और गुजरात को भरपूर टीके दिए गए हैं, लेकिन महाराष्ट्र

के संबंध में कोई ठोस आश्वासन नहीं दिया गया है। रोजाना दिए जा रहे हैं ११ लाख डोज पिछले कुछ दिनों से राज्य में रोजाना नौ से ११ लाख वैक्सीन की डोज दी जा रही है। राज्य में ४,५०० केंद्रों के माध्यम से रोजाना १५ से २० लाख वैक्सीन देने की क्षमता है जबकि रोजाना दो से तीन हजार टीकाकरण केंद्रों पर ही वैक्सीन दी जा रही है। स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि कई जगहों पर टीकाकरण केंद्रों को बंद करना पड़ा है क्योंकि वे मुख्य रूप से केंद्र से वैक्सीन की आपूर्ति पर निर्भर हैं। महाराष्ट्र में अब तक ५ करोड़ ९० लाख ६६ हजार लोगों को टीका लगाया जा चुका है और दूसरी खुराक लेनेवालों की संख्या मात्र १ करोड़ ५९ लाख ९७ हजार ३१७ है। कोरोना की तीसरी लहर को देखते हुए जरूरी है कि स्वास्थ्यकर्मियों और प्रंटलाइन वर्करों को वैक्सीन की दूसरी खुराक मिले। इस वर्ग को तत्काल दूसरी खुराक की आवश्यकता है। कोविड टास्क फोर्स के डॉक्टरों के अनुसार, राज्य में वैक्सीन की दूसरी खुराक प्राप्त करने वालों में से दो प्रतिशत लोगों में कोरोना पाया गया, जिनमें कई डॉक्टर व स्वास्थ्यकर्मी शामिल हैं। केंद्र ने नहीं उपलब्ध कराया टीका महाराष्ट्र में केवल ५.९० करोड़ ६६ हजार लोगों को टीका लगाया जा सका क्योंकि केंद्र ने राज्य को पर्याप्त मात्रा में टीका उपलब्ध नहीं कराया था।

गोरेगांव में 'सुंदरवन!'

मुंबई, गोरेगांव (पूर्व) में 'फिल्मसिटी' के पास गोरेगांव-मुलुंड लिंक रोड पर स्थित शहीद विजय सालस्कर पार्क क्षेत्र में युवाओं और बुजुर्गों के लिए घूमने-फिरने और अवकाश के दौरान कुछ आनंद के क्षण बिताने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है। यहां लगे रंग-बिरंगे फूलों की विभिन्न प्रजातियों के साथ अलग-अलग जानवरों की मूर्तियों और खेल-कूद के लिए संसाधनों के चलते लोग बड़ी संख्या में आकर्षित होते हैं। पहले तो कोरोना के चलते इस पार्क को मनपा ने बंद कर रखा था। लेकिन अब जब धीरे-धीरे मुंबई में कोरोना मरीजों की संख्या में कमी आई है, तो मनपा ने कोरोना रोकथाम प्रतिबंधों में ढील देते हुए पार्क और मैदान को आम जनता के लिए सशर्त खोल दिया है। इस उद्यान के खुलने से स्थानीय लोगों एवं बच्चों को खेलकूद और फुर्सत के पल बिताने में यहां आनंद आ रहा है। लोगों का होता है मनोरंजन गोरेगांव क्षेत्र के लोगों के लिए शहीद विजय सालस्कर पार्क नया नहीं है। यह बहुत पुराना पार्क है। लेकिन अब इसकी रूपरेखा बदल गई है। यह एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया है। पार्क विभिन्न जानवरों और पक्षियों की अवधारणा पर आधारित है। उद्यान रंगीन फूलों और हरियाली से घिरा हुआ है। फूलों की एक विस्तृत विविधता यहां के नागरिकों को सुखद अनुभव देती है। विशाल परिसर और विभिन्न सुविधाओं के कारण हर दिन कम-से-कम २,००० बच्चे, युवा और वरिष्ठ नागरिक इस पार्क में आते हैं। खेल मनोरंजन, पानी, शौच की व्यवस्था रंग-बिरंगे फूलों और जानवरों की मूर्तियों सहित पार्क में मनोरंजन की विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध हैं। विभिन्न खिलौने जैसे स्लाइड, चारपाई, मंकी बार हमेशा छोटे बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पार्क की सुंदरता को बढ़ाने और बच्चों के मनोरंजन के लिए, पार्क में हाथी, जिराफ, शेर, बाघ, गैंडे जैसे विभिन्न जानवरों की विभिन्न मुद्राओं वाली मूर्तियां लगाई गई हैं। बगीचे में एक प्याऊ भी है, जो लोगों को पीने के लिए शुद्ध पेयजल प्रदान करता है। यहां शौचालय की भी सुविधा उपलब्ध कराई गई है। कोरोना संक्रमण के चलते पिछले वर्ष मार्च में ही इसे बंद कर दिया गया था। लेकिन इसके बीच पार्क की देखरेख में कोई कमी नहीं की गई।

घर-घर नल!... जलापूर्ति के लिए युद्धस्तर पर चलाओ अभियान... मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे का निर्देश

मुंबई, जलजीवन मिशन के तहत वर्ष २०२४ तक राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में १ करोड़ ४२ लाख ३६ हजार पाइप कनेक्शन उपलब्ध कराने का लक्ष्य है। हालांकि यह लक्ष्य बड़ा है लेकिन यह पुण्य का काम है और हमें करना ही है। सभी एजेंसियां २०२४ तक पानी की पाइप जोड़ने के इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए समयबद्ध कार्यक्रम बनाएं और इस पर युद्ध स्तर पर अमल करें। यह निर्देश मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने कल संबंधित अधिकारियों को दिया। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की अध्यक्षता में कल हुई बैठक में जलजीवन मिशन योजना और क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि जलजीवन मिशन के तहत राज्य में नल जोड़ने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए धनराशि उपलब्ध कराई जाएगी। धन की कोई कमी नहीं पड़ने दी जाएगी। जलजीवन मिशन के कार्य में तेजी लाने के लिए जलापूर्ति विभाग के अंतर्गत रिक्त पदों को अस्थाई आधार पर बाहरी इंजीनियरों द्वारा भरा जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव को निर्देश दिया है कि जलजीवन मिशन के तहत सभी संभागायुक्त, कलेक्टर और जिला परिषदों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियमित रूप से कार्यों की समीक्षा करें।

२४,९४९ करोड़ रुपए होंगे खर्च

जलापूर्ति एवं स्वच्छता मंत्री गुलाबराव पाटील ने बताया कि जलजीवन मिशन के तहत २४ हजार ९४९ करोड़ रुपए की लागत से वर्ष २०२४ तक ३८,६५३ योजनाओं को पूरा करने का लक्ष्य है। मुख्यमंत्री के सरकारी आवास 'वर्षा' बंगले में हुई इस बैठक में मुख्य सचिव सीताराम कुंटे, नियोजन विभाग के अपर मुख्य सचिव देबाशीष चक्रवर्ती सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

सफेद दूध से काली कमाई...

रु. 13 के लिए स्वास्थ्य से खिलवाड़!

मुंबई, मुंबई में ब्रांडेड दूध में मिलावट के खेल का खुलासा मुंबई पुलिस क्राइम ब्रांच की यूनिट-७ ने किया है। आरोपी अमूल, गोकुल और दूसरे प्रतिष्ठित ब्रांड के दूध के पैकेटों में से करीब २० फीसदी दूध निकालकर उतना ही पानी मिलाने का गोरखधंधा कर रहे थे। इस एक लीटर मिलावटी दूध से वे १३ से १५ रुपए की काली कमाई करते थे। दूध में दगाबाजी करनेवाले ४ आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। आरोप है कि गिरफ्तार आरोपी दूध में दूषित पानी मिला कर लोगों के स्वास्थ्य को खतरे में डाल रहे थे। बता दें कि यूनिट-७ की महिला एपीआई सुनयना सोनावणे को घाटकोपर के पंत नगर इलाके में दूध में मिलावट करनेवाले गिरोह की जानकारी मिली थी। डीसीपी दत्ता नलावड़े के मार्गदर्शन व वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक मनीष श्रीधनकर के नेतृत्व में यूनिट-७ की टीम ने पंत नगर अंतर्गत ९० फीट रोड स्थित गुरुनानक नगर में छापेमारी की। वहां एक मकान में ४ लोग ब्रांडेड दूध की थैलियों को काट कर उसमें से दूध निकाल रहे थे और उसमें दूषित पानी भरकर मोमबत्ती की मदद से थैलियों को फिर से पैक कर रहे थे। बताया जाता है कि मिलावटखोर एक लीटर दूध में करीब २०० मिलीलीटर पानी मिलाते थे। वहीं दूध की थैलियों में से निकाला गया दूध डुप्लीकेट थैलियों में भरकर उसे बेचते थे। मिलावट का ये खेल किराए के कमरे में खेला जा रहा था। आरोपी मुख्यत: दक्षिण मुंबई के रहनेवाले हैं। टीम ने मौके से अमूल, गोकुल, गोविंद आदि कंपनियों का ६१९ लीटर मिलावटी दूध बरामद किया है। इसके अलावा प्रतिष्ठित कंपनियों के १,६५५ डुप्लीकेट खाली पैकेट बरामद किए हैं।

सांसों में घुलता जहर

अमेरिका स्थित एक रिसर्च ग्रुप एनर्जी पॉलिसी इंस्टिट्यूट ऑफ यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो (एपिक) की ताजा रिपोर्ट में बताया गया है कि दिल्ली समेत मध्य, पूर्वी और उत्तरी भारत में रह रहे 48 करोड़ से ज्यादा लोगों को खतरनाक स्तर तक पहुंच चुके वायु प्रदूषण की कीमत अपनी जिंदगी के कीमती साल कम करते हुए चुकानी पड़ सकती है। रिपोर्ट कहती है कि करीब 40 प्रतिशत भारतीयों की जीवन प्रत्याशा में खराब हवा के चलते 9 साल से भी ज्यादा की कटौती होने वाली है। यही नहीं, प्रदूषित हवा का दायरा पहले से ज्यादा फैलते हुए महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश को भी चपेट में ले रहा है। मगर रिपोर्ट का यह आकलन साल 2019 की स्थिति पर आधारित है। तब भारत की हवा में पीएम (पर्टिक्युलेट मैटर) की औसत मात्रा 70.3 माइक्रोग्राम पर क्यूबिक मीटर पाई गई थी, जो दुनिया में सबसे ज्यादा तो थी ही, वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन द्वारा तय मानक से सात गुना अधिक थी। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह इसी स्तर पर टिकी रहेगी या धीरे-धीरे हालात और बदतर होंगे? हवा में बढ़ता प्रदूषण हमारे लिए कोई नई बात नहीं है। 2020 में एक स्विस ग्रुप आईक्यूएयर द्वारा पेश की गई रिपोर्ट में दिल्ली को लगातार तीसरे साल दुनिया की प्रदूषित राजधानी बताया गया था। पिछले साल गर्मियों में सख्त लॉकडाउन के चलते अपेक्षाकृत साफ हवा में सांस लेने वाली दिल्ली ने ठंड के दिनों में वैसा ही प्रदूषण झेला था। आसपास के राज्यों में पराली जलाने से दिल्ली में जानलेवा स्मॉग फैलता है, सब जानते हैं, लेकिन मामला ऑड-ईवन के जरिए कुछ दिनों तक ट्रैफिक का जोर कम करने और कंस्ट्रक्शन के काम पर कुछ समय की रोक लगाने जैसे तात्कालिक उपायों से आगे नहीं बढ़ता। अच्छी बात यह है कि यह रिपोर्ट मामले की गंभीरता बताने के

साथ-साथ भविष्य की बेहतर तस्वीर भी दिखाती है। रिपोर्ट के मुताबिक हालात इतने नहीं बिगड़े हैं कि सुधारे न जा सकें। इस लिहाज से यह खास तौर पर भारत सरकार के नैशनल क्लीन एयर प्रोग्राम का जिक्र करती है, जो 2019 में लॉन्च किया गया था।

इस कार्यक्रम का लक्ष्य सबसे ज्यादा प्रभावित 102 शहरों में वायु प्रदूषण के स्तर में 20 से 30 फीसदी तक कटौती करना है। रिपोर्ट बताती है कि अगर इस कार्यक्रम के लक्ष्य पूरे हो गए तो देश में औसतन जीवन प्रत्याशा में 1.7 साल की और दिल्ली में 3.1 साल तक की बढ़ोतरी हो सकती है। चीन जैसे देश वायु प्रदूषण को कम करने में शानदार सफलता हासिल कर चुके हैं। हमें यह भी समझना होगा कि वायु प्रदूषण से स्वास्थ्य सेवाओं पर सरकारी खर्च में भी बढ़ोतरी होती है। इसलिए नैशनल क्लीन एयर जैसे प्रोग्राम को सख्ती से लागू करना होगा। हमें स्वच्छ हवा को राष्ट्रीय प्राथमिकता में शामिल करना होगा।

खर्च बढ़ाए सरकार

किरीट ए. चावड़ा

वित्त वर्ष 2021-22 की पहली यानी अप्रैल-जून तिमाही में आर्थिक विकास दर (जीडीपी) 20.1 प्रतिशत रही। इसकी वजह यह है कि पिछले साल की इसी तिमाही में जीडीपी में 24.4 प्रतिशत की गिरावट आई थी। यानी पिछले वित्त वर्ष की पहली तिमाही में भारी गिरावट के कारण इस साल अप्रैल-जून तिमाही में जीडीपी ग्रोथ अच्छी दिख रही है। अगर इसकी तुलना कोरोना महामारी के दस्तक देने से पहले यानी वित्त वर्ष 2019-20 की अप्रैल-जून तिमाही से करें तो यह 9.4 प्रतिशत कम है। वित्त वर्ष 2020-21 की आखिरी तिमाही (जनवरी-मार्च) की तुलना में इस साल की अप्रैल-जून तिमाही की आर्थिक विकास दर 16.9 फीसदी कम है। इसकी एक बड़ी वजह कोरोना की दूसरी लहर रही, जिससे इकॉनमी को उबरने में वक्त लग सकता है। ऐसे में लगता नहीं कि वित्त वर्ष 2021-22 की बाकी बची तीन तिमाहियों में जीडीपी ग्रोथ में इतनी बढ़ोतरी होगी कि अर्थव्यवस्था का आकार महामारी से पहले के स्तर तक पहुंच पाएगा। जीडीपी के अनुपात में ग्रॉस फिक्स्ड कैपिटल फॉर्मेशन महामारी के पहले के 27 प्रतिशत तक पहुंच गया है। यहां हमें याद रखना होगा कि कोरोना के दस्तक देने से पहले भी

जीडीपी दर कमजोर थी। इसमें दूसरी दिक्कत यह है कि सरकार के खर्च बढ़ाने से अर्थव्यवस्था में निवेश बढ़ा है। यह अच्छा तो है, लेकिन इकॉनमी की रफ्तार तेज करने और उसकी अच्छी सेहत के लिए निजी क्षेत्र की ओर से निवेश बढ़ना भी जरूरी है। वह तभी होगा, जब वस्तुओं और सेवाओं की खपत यानी कंजम्पशन में बढ़ोतरी होगी। देश की अर्थव्यवस्था में 50 प्रतिशत का योगदान रखने वाला प्राइवेट कंजम्पशन इस साल की अप्रैल-जून तिमाही में 19.3 प्रतिशत बढ़ा, जबकि एक साल पहले की इसी तिमाही में इसमें 26.2 प्रतिशत की गिरावट आई थी। दूसरे आंकड़े भी संकेत दे रहे हैं कि इसमें कोरोना की दूसरी लहर के बाद रिकवरी नहीं हुई है। रिजर्व बैंक के मई और जुलाई के कंस्यूमर कॉन्फिडेंस सर्वे दिखाते हैं कि इसमें सुधार नहीं हुआ है। निजी खपत और कंस्यूमर कॉन्फिडेंस को बढ़ावा देने के लिए केंद्र को पेट्रोल और डीजल पर टैक्स घटाने पर भी विचार करना चाहिए। इससे आम लोगों के हाथ में खर्च करने के लिए पैसा बढ़ेगा। पेट्रोल-डीजल की ऊंची कीमतों और सप्लाई संबंधी बाधाओं के कारण इधर महंगाई दर में भी बढ़ोतरी हुई है। महंगाई की सबसे अधिक चोट गरीबों पर पड़ती है। इसलिए ईंधन के दाम में कटौती बहुत जरूरी है। एक तो इससे उनकी जिंदगी आसान होगी, दूसरे खपत में भी इजाफा होगा। हालांकि सरकार ने अर्थव्यवस्था की रफ्तार तेज करने के लिए भारी-भरकम निवेश की योजना बनाई है। इसके लिए वह अपनी संपत्तियां लीज पर देकर पैसा जुटाएगी, लेकिन इस योजना पर अमल में वक्त लग सकता है। इसलिए अभी तो उसे कर्ज लेकर निवेश बढ़ाना चाहिए।

ऑनलाइन कोचिंग में मुनाफे का खेल

जिगर डी वाढेर

भारत में तकनीक के माध्यम से शिक्षा देने वाली यानी एजुटेक कंपनियों का कारोबार तेजी से फलफूल रहा है। इस साल अकेले अगस्त में ही ऐसी तीन कंपनियां यूनिकॉर्न क्लब में शामिल हुईं। यूनिकॉर्न यानी एक अरब डॉलर से ज्यादा वैल्यू वाली कंपनी। अब यूनिकॉर्न क्लब में भारत की कुल 5 एजुटेक कंपनियां हैं। चीन में तो इन कंपनियों का साइज और भी बड़ा है। तो क्या वहां के स्कूली बच्चों का हाल भी हमारे बच्चों जैसा है? चेन्नै में स्कूल जाने वाले बच्चे के पैरंट्स और चीन के चेंगदू में रहने वाले पैरंट्स में कोई अंतर है? मां-बाप दोनों ही जगहों पर परेशान हैं। दोनों ही जगहों पर लोग अपने बच्चों के लिए अच्छी से अच्छी डिग्रियां चाहते हैं और उसके लिए अपनी सारी जमा-पूंजी दांव पर लगाने को तैयार हैं। स्कूली पढ़ाई खत्म होने के बाद पैरंट्स बच्चों को कोचिंग से लेकर लैपटॉप तक सारी सहूलियतें देने की कोशिश करते हैं, ताकि वे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सकें। चीन में नैशनल कॉलेज एंट्रेंस एग्जामिनेशन गाओकाओ है, तो भारत में जॉइंट एंट्रेंस एग्जाम यानी JEE है। एजुकेशनल टेक्नलॉजी कंपनियां तो हमारे यहां शुरुआती दौर में हैं। चीन में यह सब काफी पहले शुरू हो चुका है। वहां हुई एक स्टडी बताती है कि बड़े शहरों में पढ़ाई पर कुल खर्च का करीब 44 फीसदी हिस्सा ट्यूशन में जा रहा है। ग्रामीण इलाकों में यह आंकड़ा लगभग 16 फीसदी है। चीन में 2017 से 2019 के बीच प्राइवेट ट्यूशन में 30 फीसदी बढ़ोतरी देखी गई। इधर, भारत में भी हर तीन में से एक स्कूली बच्चा कोचिंग या ट्यूशन ले रहा है। कोविड महामारी के दौर में तो ऑनलाइन कोचिंग को पंख लग गए। कोई भी एजुटेक कंपनी इसका फायदा उठाने में पीछे नहीं रही। चाहे वह भारत की बायजूज और अनएकेडमी हो या फिर चीन की न्यू ओरिएंटल एजुकेशन और कूलर्न। ऑनलाइन कोचिंग इंस्टिट्यूट की बाढ़ ने चीन को सख्त कदम उठाने पर मजबूर कर दिया।

उसने दिग्गज इंटरनेट कंपनियों की नकेल कसी। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या भारत को भी एजुटेक कंपनियों के लिए नियम कानून बनाने चाहिए? दरअसल चीन की तरह भारत में भी ऑनलाइन एजुकेशन की सुविधाओं ने एक बड़ी खाई बना दी है। यहां तो पहले से पढ़ाई-लिखाई की एक जैसी सुविधा सबको नहीं मिल पा रही थी, अब डिजिटल दौर में यह अंतर और बढ़ रहा है। किसी बच्चे के पास लैपटॉप, टैबलेट, इंटरनेट सब कुछ है, दूसरे के पास कुछ भी नहीं। लेकिन ऐसा लग रहा है कि चीन की सख्ती ने इंडियन टेक इंडस्ट्री के लिए अपार संभावनाओं का दरवाजा खोल दिया है। एजुटेक फर्मों ने दो साल में कोचिंग से करीब 4 अरब डॉलर की कमाई की है। इसमें 50

फीसदी कमाई तो पिछले 6 महीने में ही हुई। बायजूज अब दुनिया की सबसे ज्यादा वैल्यूएशन वाली एजुटेक स्टार्टअप है। इन सबके बावजूद एजुटेक इंडस्ट्री के लिए कायदे-कानून का एक दायरा बनाना जरूरी है।

चीन जितनी सख्ती तो नहीं होनी चाहिए लेकिन सरकार को संतुलन बनाने के लिए कुछ करना होगा क्योंकि पैरंट्स की शिकायतों में बेतहाशा इजाफा हुआ है। इन कंपनियों के जाल में फंसने के बाद पैरंट्स पर कर्ज का बोझ बढ़ता ही जाता है। केवल मुनाफे के लिए काम करने वाली कई एजुटेक कंपनियां तो 'कोचिंग इंस्टिट्यूट' बन गई हैं। ये कंपनियां कोचिंग इंस्टिट्यूट और मुनाफाखोरी करने वाले स्कूलों का विकल्प बनने आई थीं, लेकिन मुनाफा कमाने की होड़ में उन्हीं की तरह बनती जा रही हैं। एक बेसिक दिक्कत एजुटेक के स्ट्रक्चर से जुड़ी है। पढ़ाई-लिखाई हर बच्चा अपनी स्पीड से करता है। सबकी समझ का अपना एक लेवल होता है और उसी हिसाब से सीखने से जुड़ी चुनौतियां होती हैं। लेकिन इन कंपनियों का पैकेज तो मोटे तौर पर फिट फॉर ऑल सरीखा है। उसमें हर बच्चे पर अलग से ध्यान दे पाना संभव नहीं।

एक पहलू फीस का भी है। करीब 20-30 साल पहले जो कोचिंग क्लासेज चलती थीं, उनमें लॉन्ग टर्म पेमेंट जैसी कोई बात नहीं होती थी। अमूमन एक महीने की फीस ली जाती थी, वह भी महीना खत्म होने के बाद। आपको पसंद आए तो पढ़िए नहीं तो दूसरी कोचिंग में चले जाइए। लेकिन अब मल्टी-ईयर पैकेज जैसे ऑफर थोपे जा रहे हैं। कहीं पैरंट्स को थर्ड-पार्टी लेंडर्स से पढ़ाई के लिए कर्ज लेना पड़ जाता है। उसकी मुसीबत अलग ही है। अगर आप सोशल मीडिया पर किसी एजुटेक कंपनी की आलोचना करते हैं, तो आप पर मुकदमा भी लाद दिया जाएगा। यह इस इंडस्ट्री की एक और बड़ी खराबी है।

सरकार के पास डिजिटल एजुकेशन बढ़ाने की क्षमता नहीं है। उसके पास साधन भी सीमित हैं। सरकारी इंफ्रास्ट्रक्चर आने वाले वक्त में शायद ही बेहतर हो पाए। लिहाजा, इस क्षेत्र में प्राइवेट कंपनियों का एकाधिकार रहेगा। उनका नेटवर्क कस्बों से लेकर दूर-दराज के गांवों तक फैल जाएगा। वेंचर कैपिटलिस्ट जिस तरह से एजुटेक इंडस्ट्री पर दांव लगा रहे हैं, उससे यह समस्या और बढ़ रही है। पहले बड़े उद्योगपति अपनी कमाई का कुछ हिस्सा जनता की भलाई वाले कामों में लगाते थे। लेकिन, अब उनका मकसद देश के तेजी से बढ़ते इंटरनेट मार्केट में निवेश कर मुनाफा कमाना भर रह गया है। पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था हमेशा से सख्त निगरानी के दायरे में रही है। अब महामारी के चलते पढ़ाई-लिखाई का सारा सिस्टम ऑनलाइन हो गया है। ऐसे में यह देखना अजीब लगता है कि अरबों डॉलर वाली एजुटेक कंपनियों पर सरकार की ओर से कोई बंदिश नहीं है। यह दलील दी जा सकती है कि इनफॉर्मेशन टेक्नलॉजी की हालिया गाइडलाइंस में कंटेंट पब्लिशर्स के लिए डिजिटल कोड है। अगर ऐसी बात है, तो एजुटेक यूनिकॉर्न को उसके दायरे में लाया जाना चाहिए। निशीथ देसाई एसोसिएट्स की अटॉर्नी आरुषि जैन कहती हैं, 'कंज्यूमर फोरम भी पीड़ित अभिभावकों और छात्रों की मदद कर सकते हैं।' हालांकि, ये सभी कानून नए हैं। इन्हें और स्पष्ट करने की जरूरत है ताकि इनकी मदद से पैरंट्स और स्टूडेंट्स का शोषण रोका जा सके।

तालिबान से बात करने में हर्ज ही क्या है

भूपेन्द्र पटेल

युद्ध होते हैं, जनांदोलन उभरते हैं, विदेशी दखल नाकाम हो जाती है, सरकारें गिरती हैं, नया निजाम सामने आता है। तीसरी दुनिया के अधिकतर देशों में ऐसा ही हाल दिखता रहा है। लिहाजा अफगानिस्तान में पिछले दिनों जो कुछ हुआ, उसमें कोई हैरत की बात नहीं थी। अमेरिका का राजनीतिक साहस चुक गया और वहां एक-दूसरे से तकरार होने लगी कि अफगानिस्तान किसके चलते हाथ से निकल गया। अशरफ गनी खतरनाक होते हालात के बीच देश से निकल गए और अफगानिस्तान की नैशनल आर्मी गायब सी हो गई। कुछ उसी तरह, जैसे वे दो लाख करोड़ डॉलर हवा हो गए, जिन्हें अमेरिका ने इस 'कभी न खत्म होने वाली जंग' में झोंका था। इन सबका का अनुमान पहले से था। हैरत की बात केवल एक रही। जिस तेजी से तालिबान का काबुल पर दोबारा कब्जा हुआ, उससे सब हैरान रह गए।

डेमोक्रेसी तो आने से रही

इसके बाद अब नफा-नुकसान के हिसाब-किताब का मामला है। तालिबान मॉडर्न डेमोक्रेसी की राह तो पकड़ेगा नहीं। मुल्ला उमर को जब अमीर घोषित किया गया, तब 1998 में कुछ इस्लामिक विद्वानों ने 'दस्तूर एमारात इस्लामी अफगानिस्तान' तैयार किया था। 2020 में इसी तरह एक और दस्तावेज 'मंसूर एमारात इस्लामी अफगानिस्तान' तैयार किया गया। दोनों ही दस्तावेजों में लोकतंत्र की मुखालफत की गई। जहां तक ताजा हालात की बात है तो हैबतुल्ला अखुंदजादा और अब्दुल गनी बरादर की कमान में तालिबान लीडरशिप का रुख अब तक ठीक-ठाक दिखा है। उन्होंने सबका खयाल रखने वाली सरकार बनाने और आम माफी देने का वादा किया है।

लेकिन विपक्षी खेमा भी लामबंद हो रहा है। तालिबान में काफी हद तक गिलजई कबीले के लोग हैं। ऐसे में दूसरे पश्तून कबीले ताजिक, बलूच और शिया हजारा लड़ाकों के साथ जा सकते हैं। वे पिछली सरकार के उप-राष्ट्रपति अमरुल्ला सालेह और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हमदुल्ला मोहिब से जुड़ना बेहतर मान सकते हैं। सालेह और मोहिब के साथ अफगान आर्मी की कई यूनिट्स अब भी हैं। पंजशीर घाटी में बैठे अहमद मसूद के वफादार ताजिक भी इनके साथ हैं। उधर, कर्नल अब्दुल दोस्तम भी उज्बेक खेमे को एकजुट कर रहे हैं। ऐसे में पिछली बार नॉर्दर्न अलायंस ने जैसी टक्कर तालिबान को दी थी, उससे कहीं ज्यादा प्रतिरोध इस बार उभर सकता है।

भारत, पाकिस्तान, चीन और रूस को डर है कि तालिबान चाहे जो वादे कर रहा हो, वह अल-कायदा, इस्लामिक स्टेट, लश्कर ए तैयबा और जैश ए मुहम्मद के लोगों से हाथ मिला सकता है। वे कश्मीर में दिक्कत बढ़ा सकते हैं और पाकिस्तान में तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान के जरिए चरमपंथ को हवा दे सकते हैं। डर यह भी है कि वे वाखन बॉर्डर के जरिए घुसपैठ कर चीन के

शिनच्यांग में उइगुर मुसलमानों को भड़का सकते हैं और रूस के दक्षिणी हिस्से में मुस्लिमों की ज्यादा आबादी वाले इलाकों में 'टेररिस्ट आइडियॉलजी' की जमीन मजबूत कर सकते हैं।

चीन का मानना है कि तालिबान के हाथ तंग हैं, लिहाजा वह भारी-भरकम कर्ज देकर और इंफ्रास्ट्रक्चर प्रॉजेक्ट्स के जरिए तालिबान को अपने साथ जोड़ सकता है। रूस अब तक सबके सामने तालिबान के पक्ष में दिख रहा है, लेकिन उसकी सोच यह है कि वह मध्य एशिया के आसपास के देशों को पंजशीर घाटी के लड़ाकों का साथ देने को तैयार कर लेगा। ताजिकिस्तान तो पहले ही उनके साथ है। उधर, पाकिस्तान मान रहा है कि उसकी खुफिया एजेंसी ISI क्वेटा और पेशावर की शूरा के साथ तालमेल बनाकर तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान के मिजाज ठंडे कर देगी। तीनों देशों की राय बन चुकी है कि तालिबान शासन को जल्द से जल्द औपचारिक मान्यता दे देनी चाहिए ताकि उसके बाद वे अपने मकसद पूरे कर सकें।

इधर भारत का हाल यह रहा कि अमेरिका का मुंह देखकर बिना सोचे-समझे कदम बढ़ाए जाते रहे और इस चक्कर में अफगान गेम से बाहर हो गए। अमेरिका ऐसी हालत में आ गया है कि अब वह अफगान धरती पर अपने हितों का बहुत खयाल नहीं रख सकता। ऐसे में इंतजार करने के बजाय भारत को तुरंत कदम बढ़ाना चाहिए और अफगान अमीरात को मान्यता दे देनी चाहिए। मान्यता देने पर तालिबान भारत का एहसान मानेगा और भारत के हितों का ध्यान रखेगा। इससे पाकिस्तान के खिलाफ बढ़त मिलेगी। कूटनीतिक तौर पर अफगानिस्तान में पकड़ बनाने से भारत का प्रभाव बढ़ेगा और गुलबुद्दीन हिकमतयार की हिज्ब ए इस्लामी जैसी भारत विरोधी ताकतों को कायदे से पस्त किया जा सकेगा, जो काबुल में सक्रिय हैं। बॉलिवुड की फिल्मों और IPL में अफगान क्रिकेटरों की मौजूदगी जैसी बातों से अफगानिस्तान में भारत पहले से लोकप्रिय रहा है। ऐसे में दोबारा अपना प्रभाव बढ़ाने में भारत को कुछ खास दिक्कत नहीं आएगी। तालिबान का भी इसमें फायदा है क्योंकि उसे वहां की करीब 30 फीसदी शहरी आबादी से राब्ता कायम करना है। बरादर और अखुंदजादा की अनुभवी जोड़ी को पता है कि अमीरात का सिस्टम बनाना एक बात है और सबको साथ लेकर चलने वाली सरकार बनाना दूसरी बात। लोकतांत्रिक भारत के साथ जुड़ने से अफगान अमीरात की इमेज को कुछ हद तक फायदा होगा और दुनिया में उसकी मकबूलियत बढ़ेगी। भारत ने अफगानिस्तान में जरंज-डेलारम हाइवे बनाने के लिए पैसा दिया था। उस हाइवे के चलते अफगानिस्तान के सुदूर इलाकों से अफीम को ईरान बॉर्डर तक लाने में आसानी हुई है। ईरान बॉर्डर पर अफीम की प्रोसेसिंग यूनिट्स हैं। अफीम की तस्करी से अफगानिस्तान को राजस्व का नुकसान होता था। हाइवे के चलते उसका रेवेन्यू बढ़ा। इस तरह की जमीनी और साफ रुख वाली पॉलिसी का फायदा यह है कि भारत को पंजशीर घाटी के गठबंधन से अपने पुराने रिश्ते बनाए रखने में भी उलझन नहीं होगी। भारत के सामने जो भी विकल्प हैं, उनमें सबसे अच्छा यही है कि तालिबान शासन को जल्द मान्यता देकर उसे लुभाया जाए और यह डर भी दिखाया जाए कि बात नहीं बनी तो विरोधी खेमे से रिश्ता मजबूत कर लिया जाएगा।

भीख मांगने के लिए डेढ़ लाख में खरीदे दो बच्चे, 100 रुपए के बांड पेपर पर हुआ सौदा

औरंगाबाद, महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में दिल झकझोर देने वाली घटना सामने आई है। यहां दो मासूम बच्चों को भीख मंगवाने के लिए डेढ़ लाख रुपये में खरीदने का मामला सामने आया है। औरंगाबाद पुलिस ने यहां एक भीख मंगवाने वाले गैंग का पर्दाफाश किया है। शहर के मुकुंदवाड़ी पुलिस स्टेशन में इस बाबत मामला दर्ज किया गया है। बच्चों की निर्मम पिटाई औरंगाबाद के मुकुंदवाडी इलाके के रामनगर में रहने वाली कांताबाई खंडागले ने पड़ोस में रहने वाली जनाबाई उत्तम जाधव नाम की महिला को उसके घर में मौजूद छोटे-छोटे बच्चों को निर्मम तरीके से मारते हुए कई बार देखा था। बुधवार को भी वो बच्चों को बुरी तरह से पीट रही थी। यह देखकर इस बार कांताबाई ने समाज सेवक देवराज वीर को फोन करके बताया। जानकारी मिलने के बाद बाद देवराज भी घटनास्थल पर पहुंचे। तब जनाबाई और उसकी बेटी सविता संतोष पगारे दोनों मिलकर एक लड़के को लकड़ी के डंडे से और हाथ से बुरी तरह पीट रहे थे। दिल को झकझोर देने वाला दृश्य देखकर देवराज वीर ने तुरंत 5 साल के बच्चे को उनके कब्जे से छुड़ाया। जिसके बाद स्थानीय पुलिस स्टेशन को घटना के बारे में जानकारी दी। सूचना के बाद पहुंची पुलिस दोनों महिलाओं और बच्चे को लेकर मुकुंडवाड़ी पुलिस स्टेशन आई।

भीख ना मांगने पर काट डालने की धमकी

मामले की गंभीरता को समझते हुए पुलिस ने बाल कल्याण संरक्षण अधिकारी एडवोकेट सुप्रिया इंगले समेत कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं को पुलिस स्टेशन में बुलाया। उसके बाद इन दोनों बच्चों को विश्वास में लेते हुए उनसे प्यार से पूछताछ की। जिसके बाद इन मासूम बच्चों ने जो बताया वह बेहद चौंकाने वाला था। बच्चों ने बताया कि हमें भीख मांगने के लिए यहां लाया गया था। अगर हम भीख नहीं मांगते थे तो हमें बुरी तरह से पीटा जाता था। अगर हमने उनकी बात नहीं सुनी तो हमें लात और घूसों से मारा जाता था। बाथरूम में सुलाया जाता था और घंटो पानी में बैठाया जाता था। बुलढाणा और जालना से खरीदे बच्चे इस प्रकरण में पुलिस ने जिस महिला आरोपी को गिरफ्तार किया है। उसने उन दोनों बच्चों को दत्तक लेने का दावा किया है। इसके लिए 100 के बॉन्ड पेपर पर लिखा पढ़ी होने की बात भी उसने बताई। महिला आरोपी सविता पगारे ने 5 साल के बच्चे को बुलढाणा जिले में एक दंपत्ति से 55 हज़ार में खरीदा था जबकि दूसरे 2 साल के बच्चे को जालना जिले से एक लाख में खरीदा गया। फिलहाल इन दोनों बच्चों को बाल सुधार गृह में भेज दिया गया है।

अनिल देशमुख के वकील की गिरफ्तारी पर नवाब मलिक ने उठाए सवाल

एनसीपी नेता और महाराष्ट्र के अल्पसंख्यक मंत्री नवाब मलिक ने अनिल देशमुख मामले में सीबीआई की भूमिका पर सवाल उठाये हैं। मलिक ने कहा कि जिस तरह से उनके वकील को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने कहा कि अचानक सीबीआई की टीम पहुंचती है और गिरफ्तार करके ले जाती है और घरवालों को भी जानकारी नहीं देती है। एक सीबीआई के अधिकारी को निलंबित कर दिया जाता है और हिरासत में ले लिया जाता है। यह कहकर कि रिश्वत लेकर रिपोर्ट लीक की गई है। मलिक ने कहा कि जब यह रिपोर्ट बाहर आई थी उस दौरान हमने पूछा था सीबीआई इसका खुलासा करे कि क्या यह रिपोर्ट सही है या नही। लेकिन इसका खुलासा नहीं हुआ है। अगर रिपोर्ट सही है और कोर्ट के सामने जाती तो अनिल देशमुख को राहत मिल सकती थी। इसलिए सीबीआई द्वारा इस तरह की कार्रवाई की जा रही है। केंद्र सरकार जिस तरह से एजेंसी का इस्तेमाल कर रही है और अनिल देशमुख को परेशान किया जा रहा है। यह एक कानूनी लड़ाई है जो हम लड़ते रहेंगें।

उत्तरभारतीय भाईयों द्वारा कोंकण की बहनों के लिए रक्षाबंधन की भेंट , BJP नेता अमरजीत मिश्र बोले- हम मदद नहीं,उपहार लेकर जा रहे हैं

मुंबई, कोंकण में आई आपदा के बाद मदद के लिए कई हाथ बढ़े,लेकिन जब मुंबई के उत्तरभारतीय भी कोंकण के लिए राहत सामग्री ले कर निकले तो उसे मदद का नाम नहीं दिया, बल्कि कहा कि यह रक्षा बंधन के निमित्त उत्तरभारतीय भाईयों की ओर से कोंकण की बहनों के लिए उपहार है। संवेदना व संस्कृति की यही पहचान विभिन्नता में एकता को प्रतिपादित करता है।बीजेपी के उपाध्यक्ष व पूर्व राज्यमंत्री अमरजीत मिश्र की संस्था अभियान द्वारा बाढ़ पीड़ितों के लिए यह राहत सामग्री भेजी गई है। पीड़ितों को राहत सामग्री चिपलून के भिले गाँव के 200 घरों के लिए स्टील के पूरे बर्तन,साड़ी,मैक्सी,टी शर्ट समेत कपड़े आदि जीवनावश्यक सामान उपलब्ध कराए गए। सामान से भरे वाहनों को विधान परिषद के नेता प्रतिपक्ष प्रवीण दरेकर ने झंडा दिखा कर रवाना किया।मंगलवार को बीजेपी प्रदेश कार्यालय पर हुए एक भव्य समारोह में उन्होने कहा कि मुंबई का उत्तरभारतीय समाज महाराष्ट्र के सुख दुख में खड़ा रहता है। उन्होंने इस तरह का संदेश देने के लिए अमरजीत मिश्र की प्रशंसा की। कोंकण विकास आघाडी के अध्यक्ष सुहास आडिवरेकर ने अभियान की भावना का तारीफ की। मुंबई बीजेपी के उपाध्यक्ष व पूर्व राज्यमंत्री अमरजीत मिश्र ने कहा कि हम मदद सामग्री लेकर नहीं जा रहे,बल्कि हम रक्षा बंधन के निमित्त कोंकण की अपनी बहनों के लिए भेट लेकर जा रहे हैं। यह उपहार कृतज्ञतापूर्वक हम भिले गाँव की बहनों को देंगे।

UK, यूरोप समेत 10 से अधिक देशों से आने वालों को RT-PCR टेस्ट कराना होगा, लेकिन 14 दिन क्वारैंटाइन रहने का नियम खत्म

कोरोनावायरस के नए वैरिएंट C.1.2 के सामने आने के बाद मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर आने वाले सभी अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए RT-PCR टेस्ट अनिवार्य कर दिया है। BMC ने एक सर्कुलर जारी कर कहा है कि 3 सितंबर से यूके, यूरोप, मध्य पूर्व, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, बांग्लादेश, बोत्सवाना, चीन, मॉरीशस, न्यूजीलैंड, जिम्बाब्वे से मुंबई हवाई अड्डे पर पहुंचने वाले अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए RT-PCR टेस्ट अनिवार्य है। नया कोविड वेरिएंट C.1.2 पहली बार दक्षिण अफ्रीका में मिला था। अच्छी बात यह है कि भारत में इसका कोई केस अभी तक नहीं मिला है। इस नियम के लागू होने के बाद पुराने नियम रद्द हो जाएंगे, जिसमें वैक्सीन की दोनों डोज और 65 वर्ष से अधिक उम्र के सीनियर सिटिजन को मिलने वाली छूट शामिल है। नए सर्क्युलर के अनुसार, हवाई यात्रा करने वाले अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए क्वारंटाइन होने वाला नियम खत्म कर दिया गया है। अन्य देश के यात्रियों को लानी होगी नेगटिव रिपोर्ट यात्रियों के RT-PCR के लिए मुंबई एयरपोर्ट पर सभी तैयारियां कर ली गई है। अब मुंबई एयरपोर्ट पर एक घंटे में कम से कम तीन यात्रियों की कोरोना जांच कर ली जाएगी। इन देशों को छोड़कर अन्य देशों से आने वाले यात्रियों को आने पर या यहां से कहीं और जाने वाले यात्रियों को 72 घंटे के अंदर का RT-PCR टेस्ट की निगेटिव रिपोर्ट दिखाना अनिवार्य होगा। उसके बाद ही यात्री एयरपोर्ट से बाहर जा सकेगा।

NIA ने एंटीलिया केस और हिरेन हत्याकांड में दाखिल की चार्जशीट, सचिन वाजे को बनाया आरोपी

मुंबई, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) ने मुंबई में एक स्पेशल एनआईए कोर्ट के सामने एंटीलिया बम कांड और मनसुख हिरेन हत्या के मामलों में अपनी चार्जशीट पेश की। एनआईए ने शुक्रवार को बर्खास्त पुलिस अधिकारी सचिन वाजे और अन्य के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया। केंद्रीय जांच एजेंसी ने वाजे के अलावा पूर्व 'एनकाउंटर स्पेशलिस्ट' प्रदीप शर्मा और कुछ अन्य पूर्व पुलिसकर्मी भी इस मामले में आरोपी हैं। बचाव पक्ष के एक वकील ने बताया कि पिछले महीने जांच एजेंसी को कोर्ट ने प्रक्रिया पूरी करने के लिए 30 और दिन की मंजूरी दी थी। इस अवधि के समाप्त होने से दो दिन पहले एजेंसी ने यह चार्जशीट दाखिल की है। यह मामला इस साल 25 फरवरी को उद्योगपति मुकेश अंबानी के दक्षिण मुंबई स्थित आवास के निकट विस्फोटक सामग्री वाली कार मिलने से संबंधित है। इसके अलावा ठाणे के एक व्यवसायी मनसुख हिरन की मौत से भी यह जुड़ा है जिनका शव एक नाले से बरामद किया गया था। यह है पूरा मामला दरअसल दक्षिण मुंबई में मुकेश अंबानी के बहुमंजिला घर 'एंटीलिया' के निकट 25 फरवरी को एक स्कॉर्पियो गाड़ी लावारिस खड़ी मिली थी। 25 फरवरी की दोपहर में पुलिस ने कार से 20 जिलेटिन विस्फोटक की छड़ें बरामद की थीं। मामले की जांच उस समय मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच में तैनात सचिन वाजे ने अपने हाथ में ले ली थी। हालांकि बाद में इसकी जांच केंद्रीय जांच एजेंसी (NIA) को सौंपी गई।

इसके बाद 5 मार्च को स्कॉर्पियो के मालिक मनसुख हिरेन का शव बरामद हुआ। इस मामले में महाराष्ट्र एटीएस ने हत्या का केस दर्ज कर जांच शुरू की। इस बीच एनआईए ने 13 मार्च को मुंबई क्राइम ब्रांच के सचिन वाजे को गिरफ्तार किया। बाद में दोनों मामलों की जांच एनआईए को सौंप दी गई थी।

चिदंबरम बोले, एमएनपी का उद्देश्य बताए मोदी सरकार

मुंबई, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने राष्ट्रीय मौद्रिकीकरण पाइपलाइन (एमएनपी) को लेकर शुक्रवार को केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार को अपने इस कदम के उद्देश्यों और चार साल की अवधि में छह लाख करोड़ रुपये के राजस्व जुटाने के लक्ष्य के बारे में देश को बताना चाहिए। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए चिदंबरम ने कहा ने मोदी सरकार से 20 सवाल किए और कहा कि कांग्रेस को एमएनपी और सरकार द्वारा ठेके पर दी जान वाली संपत्तियों को लेकर आपत्ति है। उन्होंने यह भी कहा कि जिन संपत्तियों की पहचान एमएनपी के तहत की गई है, उनसे मौजूदा समय में भी कोई न कोई राजस्व जरूर मिल रहा होगा। उनके मुताबिक, अगर ऐसा है तो क्या सरकार ने मौजूदा राजस्व और चार साल की अवधि में मिलने वाले छह लाख करोड़ रुपये के राजस्व में अंतर का आकलन किया है। अगर किया है तो फिर इन चार वर्षों में हर साल दोनों राजस्व में कितना अंतर होगा। इस मौके पर उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी ने सत्ता में रहते हुए घाटे में चल रही संपत्तियों का मौद्रिकीकरण किया, जबकि मोदी सरकार इसके उलट काम कर रही है।

ठंडे बस्ते में गया गारगाई प्रॉजेक्ट, काटने होंगे 4.5 लाख पेड़

मुंबई, महानगर में 24 घंटे पानी आपूर्ति के लिए बीएमसी ने जोरशोर से पालघर जिले में गारगाई प्रॉजेक्ट शुरू करने की घोषणा की थी। इस पर अध्ययन व रोडमैप तैयार करने के लिए बीएमसी करोड़ों रुपये खर्च कर चुकी है, लेकिन अब लगता है कि बीएमसी ने उस प्रॉजेक्ट से हाथ पीछे खींच लिए हैं। बीएमसी कमिश्नर आईएस चहल के बयान के बाद यह लगभग तय हो गया है कि गारगाई प्रॉजेक्ट या तो लंबे समय के लिए रोक दिया जाएगा, या उसे रद्द कर दिया जाएगा। कमिश्नर चहल ने कहा था कि गारगाई प्रॉजेक्ट को पूरा करने के लिए 4.5 लाख पेड़ काटने पड़ेंगे। उसकी अपेक्षा मालाड के मनोरी में समुद्र के पानी को मीठा बनाने का प्रॉजेक्ट पर्यावरणपूरक है।

कई मुश्किल हैं राह में

बीएमसी की योजना के अनुसार गारगाई प्रॉजेक्ट से मुंबई को प्रतिदिन 450 एमएलडी पानी मिलता। इस प्रॉजेक्ट को वर्ष 2024- 25 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था। 3105 करोड़ के इस प्रॉजेक्ट के लिए जमीन अधिग्रहण व लगभग 1000 परिवारों को विस्थापित किया जाना है, लेकिन बीएमसी के सामने सबसे बड़ी परेशानी 4.5 लाख पेड़ को काटना है।

बीएमसी के अतिरिक्त आयुक्त पी वेलरासू ने कहा कि समुद्र के पानी को मीठा करने के लिए लगने वाली बिजली मध्य वैतरणा पर बनाए जा रहे सौर ऊर्जा प्रॉजेक्ट से मिल जाएगी।

इससे बीएमसी का बिजली खर्च भी बच जाएगा, जबकि गारगाई प्रॉजेक्ट के लिए लाखों पेड़ों को काटना पड़ेगा।

- गारगाई प्रॉजेक्ट की संकल्पना वर्ष 2012 में बनी थी।
- वर्ष 2012 में प्रॉजेक्ट की अनुमति लागत 1820 करोड़ रुपये थी।
- बीएमसी ने 15 करोड़ रुपये कंसल्टिंग फीस दी।
- प्रॉजेक्ट की लागत बढ़ कर 3105 करोड़ हुई।
- प्रॉजेक्ट के लिए 840 हेक्टेयर जमीन, 670 हेक्टेयर फॉरेस्ट विभाग की।
- 6 गांव के 1000 लोग प्रॉजेक्ट से होंगे प्रभावित।

मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के ड्रीम 'मनोरी प्रॉजेक्ट'

मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने मुंबई में भविष्य में पानी की जरूरत को पूरा करने के लिए मनोरी में समुद्र के पानी को मीठा करने का प्रॉजेक्ट शुरू करने की योजना बनाई है। जिसे बीएमसी कमिश्नर आईएस चहल मूर्तरूप देने के लिए तत्पर हैं। मनोरी प्रॉजेक्ट के लिए बीएमसी , एमटीडीसी से 12 हेक्टेयर जमीन लेगी।

बोरीवली में एक इमारत की सातवीं मंजिल में लगी भीषण आग

मुंबई, मुंबई के बोरीवली में एक इमारत की सातवीं मंजिल में शनिवार सुबह भीषण आग लग गई। घटना की सूचना मिलते ही दमकल कर्मी मौके पर पहुंच गए और आग पर काबू पा लिया। हालांकि इस दौरान एक दमकल कर्मी भी घायल हो गया और उसे अस्पताल ले जाया गया। आगे के विवरण की प्रतीक्षा है। महाराष्ट्र के बोईसर में शनिवार सुबह जखारिया फैब्रिक लिमिटेड नाम की एक कपड़ा फैक्टरी में तेज धमाके के साथ आग लग गई। इस हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि हां उपस्थित चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की टीमें मौके पर पहुंच गई और घायलों को सुरक्षित बाहर निकालकर इलाज के लिए अस्पताल पहुंचा दिया। फिलहाल दमकल विभाग आग पर काबू पाने की कोशिश में लगा हुआ है।

पुणे में राजीव गांधी के नाम पर साइंस सिटी बनाएगी महाराष्ट्र सरकार

मुंबई, महाराष्ट्र की शिवसेनानीत महाविकास अघाड़ी सरकार पुणे में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नाम पर साइंस सिटी का निर्माण करेगी। केंद्र सरकार की एक योजना के तहत इसके लिए 191 करोड़ रुपये की राशि भी स्वीकृत कर दी गई है। यह सिटी पांच वर्ष में बनकर तैयार हो जाएगी। महाराष्ट्र सरकार की मंत्रिमंडल की बैठक में फैसला किया गया है कि राज्य में विज्ञान के प्रति रुचि पैदा करने के लिए पुणे के पिंपरी-चिंचवण क्षेत्र में भारत रत्न राजीव गांधी साइंस इन्नोवेशन सिटी का निर्माण किया जाएगा। आठ एकड़ में बनने वाली यह सिटी 2013 में बनकर तैयार हो चुके पिंपरी-चिंचवण साइंस पार्क के निकट होगी। पिंपरी-चिंचवण साइंस पार्क के शैक्षणिक अधिकारी सुनील पोटे के अनुसार, यह सिटी चीन, सिंगापुर आदि देशों में बने साइंस पार्कों की तर्ज पर बनाया जाएगी। जिसका उद्देश्य छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि पैदा करना होगा।

बड़े थैले बने डिजिटल लॉकर की परेशानी, रेलवे पुराने तरीके से सामान रखने की भी सुविधा रखेगी जारी

मुंबई, मध्य रेलवे ने हाल ही में लंबी दूरी के यात्रियों के लिए छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस पर डिजिटल लॉकर की सुविधा शुरू की है। इस नई पहल से मध्य रेलवे मुंबई डिविजन को अब तक करीब एक लाख रुपये की कमाई हुई है। डिजिटल लॉकर पुरानी व्यवस्था से काफी सुरक्षित है, लेकिन अब रेलवे को नई परेशानी से गुजरना पड़ रहा है। इन डिजिटल लॉकर्स में निश्चित आकार के सामान को ही रखा जा सकता है, जबकि कई यात्री अभी भी बड़े-बड़े थैले इत्यादि लेकर यात्रा करते हैं। इस तरह के यात्रियों के लिए रेलवे को अब मजबूरन पुरानी व्यवस्था को भी साथ में चालू रखना पड़ रहा है। अब यात्रियों को मिलेंगी दोनों सुविधाएं मध्य रेलवे मुंबई डिविजन के सीएसएमटी के बाद अब दादर और लोकमान्य तिलक टर्मिनस पर भी डिजिटल लॉकर की सुविधा देने की तैयारी की जा रही है। लेकिन, नई परेशानी के बाद रेलवे ने पुरानी और नई, दोनों व्यवस्था देने की तैयारी की है। नई व्यवस्था में तीन तरह के लॉकर होते हैं, जो छोटे, माध्यम और निश्चित आकार के बड़े सामान रखने के लिए पर्याप्त हैं। इसमें सामान रखने वाले यात्रियों को QR कोड वाली रसीद मिलती है। जब सामान निकालना हो, तब कोड स्कैन करने के बाद लॉकर खुल जाता है। दो हजार यात्रियों ने ली सुविधा पिछले महीने 15 अगस्त

से सीएसएमटी पर डिजिटल लॉकर की शुरुआत की थी, 15 दिनों में 2204 यात्रियों ने इसका लाभ उठाया। इन लॉकर में 3446 सामान रखे गए, जिससे रेलवे को ₹1.03 लाख की कमाई हुई। इस दौरान रेलवे ने ज्यादा बड़े सामान के लिए अलग से ओपन लॉकर की सुविधा भी दी है। डिजिटल लॉकर की सुविधा लेने के लिए यात्री को प्रति सामान ₹30 अदा करने होते हैं और लॉकर का इस्तेमाल 24 घंटों तक किया जा सकता है। लॉकर में रखने से पहले सामान को सुरक्षा कारणों से स्कैन किया जाता है। पुराने सिस्टम में सामान रखने के लिए यात्री को टोकन मिलता था, लेकिन नए सिस्टम में यात्रियों को पीएनआर नंबर के साथ आधार नंबर और मोबाइल नंबर देना होता है। आकार के अनुसार लॉकर खोल दिया जाता है और सामान रखने के बाद QR कोड वाली रसीद दी जाती है। रसीद खोने पर क्या होगा सामान निकालने के लिए QR वाली रसीद की जरूरत पड़ती है, लेकिन इसके खो जाने पर यात्री को अतिरिक्त भुगतान करना पड़ेगा। रसीद को दो बार इस्तेमाल भी नहीं किया जा सकता है और खराब होने या खो जाने की स्थिति में ड्यूप्लिकेट रसीद के माध्यम से सामान प्राप्त किया जा सकता है। यदि कोई यात्री 7 दिन में सामान लेने नहीं आता है, तो उससे संपर्क करने के बाद सामान को भूल-चूक वाली श्रेणी में डाल दिया जाता है। डिजिटल लॉकर पर हर समय सीसीटीवी की नजर बनी रहती है। मध्य रेलवे ने इन लॉकर्स की बदौलत पांच साल में ₹79.65 लाख का राजस्व प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

सावधान-कोरोना से सुरक्षा देने में नीला सर्जिकल मास्क हुआ 'फेल', अध्ययन में बड़ा खुलासा

दुनियाभर में कोरोना संक्रमण के खतरे को देखते हुए स्वास्थ्य विशेषज्ञ सभी लोगों से सुरक्षात्मक उपायों को लगातार प्रयोग में लाते रहने की अपील कर रहे हैं। कोरोना से बचाव के लिए मास्क पहनने, हाथों की

स्वच्छता का ध्यान रखने और सोशल डिस्टेंसिंग नियमों के पालन पर जोर दिया जा रहा है। पिछले डेढ़ साल से जारी कोरोना के कहर के चलते अब मास्क पहनना लोगों की आदत का हिस्सा बन चुका है, पर क्या हर तरीके का मास्क संक्रमण से सुरक्षा दे सकता है? क्या आप जानते हैं, कि जो मास्क लगा रहे हैं, वह संक्रमण से सुरक्षित रखने में कितना प्रभावी है? इसी से संबंधित हाल ही में किए गए अध्ययन में वैज्ञानिकों ने नीले रंग के सर्जिकल मास्क को लेकर बड़ा खुलासा किया है। अध्ययन में वैज्ञानिकों ने इस तरह के मास्क को कोरोना से सुरक्षा देने में अप्रभावी बताया है।कनाडा में वाटरलू विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन में वैज्ञानिकों ने बताया है कि महामारी के दौरान अधिकांश लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नीले रंग वाले सर्जिकल फेस मास्क को कोविड-19 संक्रमण से सुरक्षा देने में असरदान नहीं पाया गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि संक्रमण से सुरक्षित रहने के लिए लोगों को और दूसरे तरह के मास्क पहनने चाहिए, क्योंकि सर्जिकल फेस एरोसोल की बूंदों को रोकने में ज्यादा प्रभावी नहीं माने जा सकते हैं। आइए इस अध्ययन के बारे में आगे की स्लाइडों में विस्तार से जानते हैं।क्यों असरदार नहीं हैं सर्जिकल मास्क?मास्क की प्रभाविकता को लेकर किए गए इस अध्ययन में शोधकर्ता बताते हैं, महामारी के दौरान लोकप्रिए हुए नीले सर्जिकल मास्क को केवल 10 फीसदी तक ही प्रभावी माना जा सकता है, इसका मुख्य कारण यह है कि इस तरीके के मास्क चेहरे को अच्छी तरह से ढक नहीं पाते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि जिस तरह से कोरोना के नए और अधिक संक्रामक वैरिएंट्स के बारे में पता चल रहा है, ऐसे में लोगों के लिए मास्क पहनना बेहद आवश्यक है। एन95 और केएन95 जैसे मास्क अधिक प्रभावी ढंग से कोरोना से सुरक्षा दे सकते हैं। चेहरे को अच्छी तरह से कवर करने वाले मास्क पहनेंविश्वविद्यालय में मेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग के प्रोफेसर और अध्ययन के प्रमुख डॉ सेरही यारुसेविच कहते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है कि संक्रमण से बचाव के लिए चेहरे को अच्छी तरह से कवर करना सबसे आवश्यक है, हालांकि जब बात एरोसोल को नियंत्रित करने की आती है तो विभिन्न मास्क की प्रभावशीलता में बड़ा अंतर देखने को मिला है। बहुत से लोग ऐसे मास्क पहनते हैं जो उनके चेहरे पर ठीक से फिट नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति में एरोसोल की बूंदें बाहर आ सकती हैं, जिससे लोगों को संक्रमण हो सकता है। नीले सर्जिकल मास्क को इसी आधार पर संक्रमण से सुरक्षा देनें में फिट नहीं पाया गया है। कौन से मास्क हैं ज्यादा प्रभावी?अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि सर्जिकल मास्क की तुलना में एन95 मास्क को एरोसोल की बूंदों को फिल्टर करने में अधिक सक्षम पाया गया है। प्रोफेसर यारुसेविच कहते हैं, यह सामान्य सी बात है कि जो मास्क नाक और मुंह को अच्छी

मनोज जोशी

तरह से कवर करेगा उसे संक्रमण से सुरक्षा देने में ज्यादा कारगर माना जा सकता है। लोगों को यदि उपलब्ध हो सके तो एन95 मास्क का प्रयोग अधिक करना चाहिए। एन95 मास्क को माना जा रहा है ज्यादा असरदारगौरतलब है कि इससे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के पूर्व कोविड-19 सलाहकार और शीर्ष महामारी विज्ञानी माइकल ओस्टरहोम ने भी कहा था कि लोग जिस तरह के मास्क का प्रयोग कर रहे हैं, उसे संक्रमण से सुरक्षा देने में ज्यादा असरदार नहीं माना जा सकता है। इसी माह की शुरुआत में माइकल ओस्टरहोम ने कहा था कि लोगों को एन95 रेस्पिरेटर मास्क पहनना शुरू करना चाहिए, इस तरीके के मास्क संक्रमण से सुरक्षा देने में ज्यादा कारगर हो सकते हैं। हम एक बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में हैं, इसमें कोरोना से किस स्तर तक बचाव करना है, अभी तक बहुत स्पष्ट नहीं है।

डायबिटीज के मरीजों को लाइफस्टाइल में जरुर करने चाहिए ये बदलाव, वरना बढ़ सकती हैं मुश्किलें

डायबिटीज एक बेहद ही खतरनाक बीमारी है। इसे साइलेंट किलर भी कहा जाता है, क्योंकि अक्सर लोगों को इसके लक्षणों का पता नहीं चल पाता है। वैसे शरीर में होने वाले कुछ बदलावों से इसकी पहचान करना आसान है, लेकिन इसके बावजूद कई लोग इसे अनदेखा करने की गलती कर देते हैं, जो आगे चलकर उनके लिए जानलेवा भी साबित हो जाती है। दरअसल, इस बीमारी में मरीजों को अपना शुगर लेवल नियंत्रण में रखने की जरूरत होती है, वरना कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसीलिए डायबिटीज के मरीजों को अपने खानपान और जीवनशैली को लेकर विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। इस बीमारी में किन चीजों का सेवन फायदा दे सकता है और कौन सी चीजें नुकसान पहुंचा सकती हैं, इसके बारे में तो हर किसी को जानकारी होनी ही चाहिए।

डायबिटीज में क्या खाना चाहिए? सूरजमुखी के बीजकद्दू के बीज अलसी के बीजि तल के

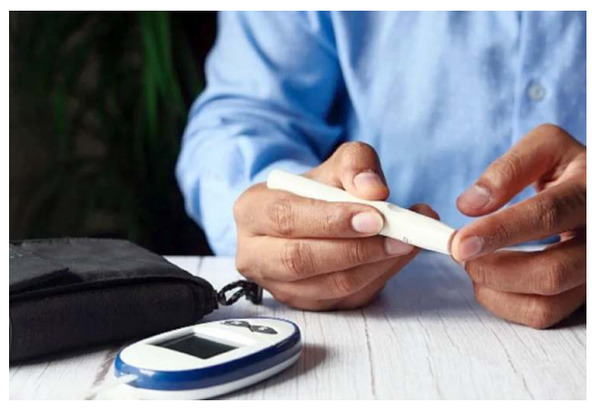

बीज टोफू, पालक, अखरोट, सोया डायबिटीज में क्या नहीं खाना चाहिए? चीनी गुड़आइसक्रीम चॉकलेट हलवा मिठाईयां, जैसे- लड्डू, जलेबी, गुलाब जामुन आदि

जीवनशैली में लाएं ये बदलाव आमतौर पर कई लोगों की यह आदत होती है कि वे खाना खाने के बाद तुरंत बिस्तर पर लेट जाते हैं। ये आदत बहुत नुकसानदायक होती है। खासकर डायबिटीज के मरीजों को तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए, बल्कि खाना खाने के बाद उन्हें

संजय शर्मा

कम से कम 15 मिनट तो टहलना ही चाहिए। विशेषज्ञ कहते हैं कि शारीरिक रूप से सक्रिय रहने से ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित रखने में मदद मिलती है।

डायबिटीज के मरीजों को किसी भी हाल में नाश्ता करना नहीं भूलना चाहिए। रात को जल्दी सो जाएं और सुबह जल्दी उठें। ज्यादा नमक युक्त खाद्य पदार्थ न खाएं। उचित मात्रा में पानी पिएं। अधिक चिंता या तनाव से दूर रहें।

कोरोना संक्रमण-इन बुरी आदतों से रहें दूर, कम हो जाती है इम्यूनिटी, बरतें सावधानी

पूरा देश करीब डेढ़ साल से एक ऐसी चुनौती से जूझ रहा है, जिसके बारे में विशेषज्ञ भी ज्यादा नहीं जानते। कोरोना महामारी के दौर में अधिकांश केसेस संक्रमण को गंभीरता से न लेने या डर और झिझक के कारण समय पर इलाज न लेने के कारण बिगड़े। चाहे कोरोना के लिए अब तक कोई सटीक इलाज न मिला हो, लेकिन इस संक्रमण से उपजी स्थितियों को नियंत्रण में रखने के लिए किए जाने वाले उपाय काफी हद तक कारगर साबित हुए हैं। ये वो उपाय हैं, जो इस तरह के संक्रमण के लिए वर्षों से चिकित्सकों द्वारा अपनाए जा रहे हैं। मुख्य बात यह है कि लक्षणों को पहचानकर समय पर इलाज लिया जाता है या नहीं। पिछले साल से अब तक कई रोगियों का इलाज करते वक्त मैंने यह भी अनुभव किया कि कई लोग इस सोच के साथ भी रहते हैं कि 'हम तो इस बीमारी को हल्के में ले रहे थे। अब संक्रमित हो गए हैं। अगर लोगों को पता चल गया तो वे

क्या सोचेंगे...' ऐसे में वे इलाज में देर कर देते हैं। संभाला जा सकता है संक्रमणयह एक तथ्य है कि आज भारत में कई अच्छे अस्पतालों के पास गंभीर से गंभीर संक्रमण को भी संभालने की क्षमता है। दवाओं की बात करें या आधुनिक चिकित्सा उपकरणों की, हमारे देश में साधन मौजूद हैं। मुश्किल तब होती है, जब मरीज बड़ी संख्या में आने लगते हैं। अगर हर व्यक्ति थोड़ी सावधानी रखें, तो शायद इसकी नौबत ही न आए।ऑर्गन फेलियर का डरि कसी भी संक्रमण को लेकर मन में सबसे बड़ी शंका इसी बात की होती है। जब आप संक्रमण को शुरुआती स्तर पर नजरअंदाज करते हैं, इलाज नहीं लेते तो आगे वह शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को चपेट में लेने लगता है। लगातार इलाज में देरी से मल्टी ऑर्गन इंवॉल्वमेंटल फेलियर (एमओएफ) की स्थिति बन सकती है। मतलब किडनियों, हार्ट, आदि को गंभीर क्षति पहुंचने का खतरा बहुत बढ़ जाता है। इसलिए डॉक्टरों की यह सलाह रहती है कि कि किसी भी बीमारी में लक्षणों की शुरुआत से ही इलाज लें, ताकि आगे रोग को बढ़ने से रोका जा सके। याद रखिए डॉक्टर्स भी इंसान हैं, उनकी जितनी क्षमता होगी, उतना प्रयास वे आपको बचाने का करेंगे ही, लेकिन यदि आपने बीमारी को बिगाड़ लिया है तो कई बार स्थितियां डॉक्टर्स के हाथ में भी नहीं होती। इसलिए अगर आप समय पर इलाज लेंगे और स्वस्थ होकर अपने परिवार के पास जाएंगे तो हमें ज्यादा खुशी होगी। व्यसन कम कर रहे इम्यूनिटी सिगरेट, शराब, बीड़ी, तंबाकू या अन्य नशीले पदार्थों की लत शरीर को बहुत नुकसान पहुंचाती है। कोरोना के कई मामलों में यह सामने आया है कि इन बुरी लतों के शिकार लोगों के लिए संक्रमण और भी बुरी स्थिति साथ लेकर आया। इससे फेफड़ों को नुकसान पहुंचने के अलावा इम्यूनिटी पर भी बुरा असर पड़ा। इतना ही नहीं इससे उनके ठीक होने में भी बाधा आई। इसलिए इन बुरी आदतों से दूर रहें।

कोरोना के बाद की तकलीफें यह भी एक ध्यान रखने लायक स्थिति है। कोरोना से संक्रमित होने के बाद इलाज ले लेने से ही तकलीफ खत्म नहीं हो जाती।

सलाह-फैटी लिवर में सूजन से राहत दिला सकती हैं ये दो चीजें, डाइट में जरुर करें शामिल

लिवर हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग होता है, जो शरीर में भोजन पचाने से लेकर पित्त बनाने तक का काम करता है। इसके अलावा यह शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने, फैट को कम करने, कार्बोहाइड्रेट को स्टोर करने और प्रोटीन बनाने में भी मदद करता है। अगर लिवर मजबूत है तो पूरा शरीर भी स्वस्थ रहता है। हालांकि आज के समय में लोगों की लाइफस्टाइल इतनी बदल गई है कि वे लिवर संबंधी तरह-तरह की बीमारियों की शिकार हो रहे हैं, जिसमें फैटी लिवर की समस्या भी शामिल है। दरअसल, लिवर में जब अतिरिक्त वसा इकट्ठी हो जाती है, तो उस स्थिति को फैटी लिवर कहा जाता है। वैसे तो यह एक बेहद ही सामान्य लिवर की बीमारी है, लेकिन अगर इसपर समय रहते ध्यान न दिया गया तो इसकी वजह से कई और गंभीर और जानलेवा बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। विशेषज्ञ कहते हैं कि फैटी लिवर वाले अधिकतर लोगों में कोई भी लक्षण नहीं होते हैं, लेकिन लिवर बढ़ने के कारण कुछ लोगों को पेट के दाहिनी ओर दर्द का अनुभव हो सकता है। इसके अलावा थकान, मतली और भूख न लगने जैसे लक्षण भी दिख सकते हैं। फैटी लिवर की समस्या से जूझ रहे लोगों को अपने खानपान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है, क्योंकि आप जो भी चीजें खाते हैं, उसका असर आपके लिवर पर भी पड़ता है।

साप्ताहिक राशि भविष्यफल

मेष : मेष राशि के लिए यह सप्ताह मानसिक रूप से अस्थिरता देने वाला है। निर्णय क्षमता कमजोर रहेगी। सर्दी-जुकाम, बुखार हो सकता है। सप्ताह के मध्य से आपकी सक्रियता बढ़ेगी। कुछ अटके हुए कार्यों को गति देने का प्रयास करेंगे, लेकिन आर्थिक कमजोरी बनी रहेगी। आय में कमी और खर्च में अधिकता रहेगी।

वृषभ : यह सप्ताह मिश्रित फलदायी रहेगा। सप्ताह की शुरुआत में जो कार्य शुरू करेंगे वे सप्ताहांत तक पूरे होने की संभावना है। नौकरीपेशा लोगों को अपने कार्यस्थल पर अधीनस्थों का सहयोग मिलेगा। इस सप्ताह आप त्वचा संबंधी रोगों से परेशान रह सकते हैं। नेत्र रोग है तो उसे हल्के में ना लें।

मिथुन : मिथुन राशि के जातकों के लिए सप्ताह आर्थिक तरक्की वाला रहेगा। वर्तमान में जो कार्य चल रहे हैं उनमें तरक्की होगी, धन का आगमन अनेक मार्गों से होगा। व्यापारियों को लाभ कमाने का अवसर मिलेगा। इस सप्ताह परिवार के बुजुर्गों के साथ अच्छा वक्त बिताएंगे। आपके स्वास्थ्य में सुधार आएगा।

कर्क : सप्ताह आय बढ़ाने वाला साबित होगा। आपके संपत्ति संबंधी कार्यों में आ रही बाधाएं दूर होंगी। भवन, भूमि वाहन सुख प्राप्ति के योग हैं। विद्यार्थियों के लिए सप्ताह अत्यधिक उत्पादक रहेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। युवतियों को नया प्रेम संबंध प्राप्त होगा। निजी रिश्तों में पुरानी कड़वाहट भुलाकर नए सिरे से आगे बढ़ने का वक्त है।

सिंह : बिजनेस और नौकरीपेशा लोगों के लिए सप्ताह उत्साह बढ़ाने वाला रहेगा। कारण यह किआपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अब तक जिन कार्यों में आपको हानि हो रही थी, वे लाभ देने लगेंगे। इससे आप मानसिक शांति महसूस करेंगे। पारिवारिक स्थिति उत्तम रहेगी। प्रेम संबंधों के लिहाज से भी सप्ताह उत्तम रहेगा।

कन्या : व्यापारियों के लिए यह सप्ताह नई उम्मीदों वाला रहेगा। नौकरीपेशा को बड़ा पद और पैसा ऑफर हो सकता है। जॉब में स्थान परिवर्तन के भी योग बन रहे हैं। आर्थिक मामलों के लिए सप्ताह शुभ है। बड़ा निवेश करने जा रहे हैं तो पहले किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह अवश्य लें। दांपत्य जीवन के लिए सप्ताह ठीक है।

तुला : इस सप्ताह अचानक यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। नए कार्य व्यवसाय को लेकर योजनाएं बनेंगी, लेकिन उन्हें पूर्ण करने के लिए किसी का सहयोग लेना पड़ सकता है। संबंधों का लाभ उठाने का प्रयास करें। परिवार के बुजुर्गों को समय दें। संतानपक्ष के कार्यों को सराहना और सम्मान मिलेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा।

वृश्चिक : इस सप्ताह धन संबंधी मामलों में सावधान रहें, कोई व्यक्ति आपको नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकता है। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। इस सप्ताह बीमारियों पर भी खर्च अधिक होने की स्थिति है। पारिवारिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कर्ज लेना पड़ सकता है।

धनु : इस सप्ताह खर्च की अधिकता रहेगी। कुछ काम अचानक आएंगे और कुछ बेवजह के कामों पर खर्च होगा। नया बिजनेस शुरू करना चाहते हैं तो समय अनुकूल है। भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी अपेक्षाकृत अधिक खर्च होगा। पैतृक संपत्ति प्राप्त होने के योग बन रहे हैं। सेहत थोड़ी नरम-गरम रह सकती है।

मकर : मकर राशि के जातकों के लिए कुछ अच्छी खबरें मिलेंगी। आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, जॉब, बिजनेस सभी के लिहाज से यह सप्ताह अच्छा बीतने की संभावना बन रही है। जिन जातकों को पिछले कुछ सप्ताह से परेशानियां चल रही हैं, कार्यों में रूकावटें आ रही हैं, वे इस सप्ताह दूर हो जाएंगी।

कुंभ : विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत करनी होगी। इसके लिए जरूरी होगा समय का सही प्रबंधन करना। बौद्धिक कार्य, लेखन, साहित्य आदि से जुड़े लोगों को कोई बड़ा प्रोजेक्ट मिल सकता है। इस राशि के प्रेमियों का सप्ताह सुखद बीतेगा, आप किसी रोमांटिक यात्रा पर साथ जा सकते हैं। सेहत के लिहाज से सप्ताह ठीक नहीं रहेगा।

मीन : बिजनेस में बने हुए उतार-चढ़ाव इस सप्ताह कुछ संभलेंगे। समय प्रबंधन और प्रोफेशनल एप्रोच रखने से लाभ होगा। निजी संबंधों को सुधारने के लिए अहंकार को त्यागना होगा। छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव की स्थिति ना आने दें। कोई विवाद हो तो आपसी बातचीत से हल कर लें।

चुटकुले

भाभी- तुम पक्षियों के बारे में सब जानते हो?
देवर - जी भाभी।
भाभी - अच्छा तो बताओ कि कौन सा पक्षी उड़ नहीं सकता?
देवर - मरा हुआ पक्षी।

चाचा - बेटा क्या करते हो?
भतीजा - नारी सम्मान सेवा पर काम कर रहा हूं।
चाचा - सोशल वर्कर हो?
भतीजा - नहीं चाचा जी, फेसबुक पर सब लड़कियों की फोटो लाइक करता हूं।

जीजा - खाना कहां खाती हो?
साली - रोजाना होटल में ही खाती हूं।
जीजा - अरे रोजाना होटल में खाना मत खाया करो।
साली - ओह! ठीक है अब पैक करा के घर ले आया करुंगी।

बताइए, कितनों को दिलवाई सजा, कितने केस पेंडिंग', CBI का रिपोर्ट कार्ड तैयार करेगा सुप्रीम कोर्ट

केंद्रीय जांच ब्यूरो यानी सीबीआई की कार्यशैली से नाराज सुप्रीम कोर्ट ने एजेंसी से सक्सेस रेट बताने को कहा है। सीबीआई द्वारा मुकदमा चलाए जा रहे मामलों में अत्यधिक देरी का हवाला देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने अदालती मामलों में एजेंसी की सफलता दर (सक्सेस रेट) पर डेटा मांगा है। माना जा रहा है कि सुप्रीम कोर्ट सीबीआई के प्रदर्शन का मूल्यांकन कर सकता है। दरअसल, एक मामले में सीबीआई द्वारा 542 दिनों की देरी के बाद अपील दायर किए जाने पर सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी व्यक्त की और उसने केंद्रीय एजेंसी के कामकाज औप उसके परफॉर्मेन्स का विश्लेषण करने का फैसला किया। रिपोर्ट के मुताबिक, सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई निदेशक को निर्देश दिया है कि वह उन मामलों की संख्या को कोर्ट के सामने रखें, जिनमें एजेंसी ट्रायल कोर्ट और हाईकोर्टों में अभियुक्तों को दोषी ठहराने में सफल रही। कोर्ट ने यह भी पूछा है कि सीबीआई निदेशक कानूनी कार्यवाही के के संबंध में विभाग को मजबूत करने के लिए क्या कदम उठा रहे हैं? जस्टिस संजय किशन कौल और एमएम सुंदरेश की बेंच ने कहा कि सीबीआई की कुछ जवाबदेही होनी चाहिए। दो जजों जस्टिस संजय किशन कौल और जस्टिस एम सुंदरेश की पीठ ने कहा कि एजेंसी के लिए केवल मामला दर्ज करना और जांच करना ही काफी नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि अभियोजन सफलतापूर्वक किया जाए। पीठ ने सीबीआई से अभी निपटाए जा रहे केसों और सफलतापूर्वक पूरे किए गए मामलों का पूरा विवरण मांगा है। सीबीआई को यह भी ब्योरा देने के लिए कहा गया है कि अदालतों में कितने मामले लंबित हैं और कितने समय से हैं। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में अपील दायर करने में अत्यधिक देरी के लिए सीबीआई की खिंचाई की है। सुप्रीम कोर्ट ने अब एक कदम आगे बढ़ाते हुए अन्य मामलों में भी एजेंसी के प्रदर्शन का विश्लेषण करने का फैसला किया है। सुप्रीम कोर्ट की इस पीठ ने कहा कि हम सीबीआई की सफलता दर की जांच करेंगे। दरअसल, पीठ 2018 में सीबीआई द्वारा दायर एक साल से अधिक समय पर एक अपील से जुड़े एक मामले की सुनवाई कर रही थी, जिसमें जम्मू-कश्मीर उच्च न्यायालय ने अपना फैसला सुनाया था।

खुलासा: IS का खतरा, तालिबानी पहरा और हक्कानी घेरा, फिर भी मददगारों को कैसे निकाल ले गया अमेरिका?

अमेरिका ने अफगानिस्तान में फंसे अपने लोगों और मददगारों को निकालने के लिए अगस्त के बीच में जो ऑपरेशन शुरू किया था, उसके 30 अगस्त तक खत्म होने का ऐलान भी कर दिया। इस बीच यह सवाल भी उठे कि आखिर अमेरिका ने इतनी जल्दी अपना मिशन खत्म कैसे कर लिया, वह भी तब जब अमेरिकी अफसर निकासी कार्यक्रम के जल्द खत्म होने पर शंका जता रहे थे। इस बीच अब सामने आया है कि अमेरिका ने अपने नागरिकों को निकालने के लिए सिर्फ काबुल के ही एयरपोर्ट का इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि काबुल के बाहर तैयार किए गए एक सीक्रेट बेस का भी इस्तेमाल किया था।किसने बनाई सीक्रेट बेस से लोगों को निकालने की योजना?अमेरिका ने काबुल के बाहर मौजूद एक सीक्रेट सीआईए बेस से अपने नागरिकों को रेस्क्यू किया। -बताया गया है कि अमेरिकी नागरिकों, कमांडो और अपने मददगारों को अफगानिस्तान से निकालने के लिए अमेरिकी सेना ने अपनी खुफिया एजेंसी सीआईए द्वारा तैयार करवाए गए बेस का इस्तेमाल किया। जब निकासी कार्यक्रम के दौरान पूरे काबुल पर तालिबान और हक्कानी नेटवर्क का कब्जा हो गया और काबुल एयरपोर्ट पर आईएस आतंकियों के हमले का खतरे की खुफिया जानकारी मिलने लगी, तब यह बेस हजारों लोगों को गुपचुप तरीके से निकालने के काम आया।अमेरिका की नागिरकों को निकालने की इस कोशिश का पहला जिक्र द न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट में मिलता है। बाद में अमेरिकी मैगजीन पॉलिटिको ने भी अफसरों के जरिए इस पूरे घटनाक्रम की पुष्टि की है। इस बारे में अब तक जो फ्लाइट डेटा निकला है, उसके मुताबिक कुछ लोगों को इस सीक्रेट बेस (जिसे ईगल बेस नाम दिया गया) से

सीधा हेलिकॉप्टर-चॉपर के जरिए एयरपोर्ट पहुंचाया गया। इसकी वजह यह थी कि काबुल पर तालिबान के कब्जे के बाद शहर के हालात काफी संवेदनशील हो गए थे और सुरक्षा के लिए लगाई गई चेकिंग भी खतरनाक हो सकती थीं। ऐसे में अमेरिकी नागरिकों को सीधा एयरपोर्ट के अंदर पहुंचा दिया गया।अमेरिकी नागरिकों और मददगारों को लेकर सीधा अमेरिका नहीं गईं फ्लाइट्सफ्लाइट डेटा के मुताबिक, इस मिशन के लिए अमेरिकी सेना ने अपने हेलिकॉप्टर या चॉपर नहीं, बल्कि रूस के बने एमआई-17 हेलिकॉप्टरों का इस्तेमाल किया, जिन्हें अक्सर अफगान सैनिक उड़ाते थे। इतना ही नहीं अमेरिकी नागरिकों और उनके मददगारों को एयरपोर्ट पहुंचाने के बाद सीधा अमेरिका की फ्लाइट में नहीं बिठाया गया, वर्ना आतंकियों को शक हो सकता था। उन्हें पहले अमेरिकी कॉन्ट्रैक्टर के विमान में बिठाकर काबुल एयरपोर्ट से जर्मनी के रैमस्टीन एयरबेस पहुंचाया गया और बाद में अमेरिका भेजा गया। क्या थी सीआईए के ईगल बेस की लोकेशन?सीआईए का ईगल बेस काबुल के हामिद करजई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के उत्तर में महज 4.5 किलोमीटर की दूरी पर है। अफगानिस्तान में पकड़े गए संदिग्ध आतंकियों से पूछताछ के लिए इस बेस का 2002 से लेकर 2004 तक इस्तेमाल किया गया। बाद में सीआईए ने इसे अफगानिस्तान की आतंकरोधी सेना को तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया।रिपोर्ट्स की मानें तो अमेरिकी सेना ने आखिरी उड़ान से ठीक इस बेस को नष्ट कर दिया था, ताकि आतंकी ताकतें इसका और इसमें रखी गई गोपनीय जानकारियों का इस्तेमाल न कर पाएं। दरअसल, सीआईए ने इसमें कई ऐसे रिकॉर्ड्स छिपा रखे थे, जिनका दुश्मन ताकतों के हाथ लगना अफगानिस्तान में रहने वाले मददगारों और उनके परिवारों के लिए खतरनाक साबित हो सकता था।

तालिबान राज में किसके हाथ होगी अफगान की कमान, कैबिनेट में किन्हें मिलेगी जगह, जानें इन सबकी कुंडली

काबुल पर तालिबान के कब्जे के बाद से अफगानिस्तान में नई सरकार गठन की तैयारी जारी है। तालिबान जल्द ही सरकार की घोषणा करने को है। तालिबान सरकार का मॉडल काफी हद तक ईरान की तरह रहने वाला है। माना जा रहा है कि मुल्ला अब्दुल गनी बरादर के हाथ में अफगान सरकारर की कमान होगी।रिपोर्ट्स बताती हैं कि तालिबान नेता हिबतुल्लाह अखुंदजादा इस सरकार के सुप्रीम लीडर होंगे और प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति उनके आदेशों के तहत ही काम करेंगे। तो कौन-कौन लोग तालिबान सरकार में शामिल हो सकते हैं, आइए जानते हैं। हिबतुल्लाह अखुंदजादा अखुंदजादा 2016 से तालिबान के प्रमुख हैं। 2016 में अमेरिकी ड्रोन हमले में अख्तर मोहम्मद मंसूर के मारे जाने के बाद अखुंदजादा उनके उत्तराधिकारी बनाए गए थे। वह सोवियत आक्रमण काल में इस्लामी प्रतिरोध में शामिल रहे हैं। वह सैन्य कमांडर की तुलना में एक धार्मिक नेता के तौर पर अधिक लोकप्रिय हैं। रिपोर्ट्स बताती हैं कि पिछले तालिबान शासन के दौरान अखुंदजादा सर्वोच्च न्यायालय के उप प्रमुख थे। 2001 के बाद तालिबान के पतन के बाद, वह धार्मिक विद्वानों के समूह की परिषद के प्रमुख बनाए गए थे। मुल्ला अब्दुल गनी बरादर सुप्रीम लीडर के बाद बरादर सबसे बड़े और शक्तिशाली नेता होंगे। माने मुल्ला अब्दुल गनी बरादर

तालिबान की सरकार के मुखिया होंगे। बरादर को अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए और पाकिस्तान ने साल 2010 में एक ऑपरेशन में गिरफ्तार किया था। इसके बाद बरादर 8 साल तक पाकिस्तान की जेल में रहे। 2018 में अमेरिकी दबाव के बाद पाकिस्तान ने उसे रिहा कर दिया। फिर बरादर को कतर स्थानांतरित कर दिया गया जहां बरादर दोहा में तालिबान के राजनीतिक कार्यालय के प्रमुख नियुक्त किए गए। यहां उन्होंने उस समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके कारण अमेरिकी सेना को अपने 20 साल के अभियान को वापस लेने का समझौता करना पड़ा।
सिराजुद्दीन हक्कानी
सिराजुद्दीन, हक्कानी नेटवर्क के प्रमुख हैं। पाकिस्तान में पैदा हुए हक्कानी का नेटवर्क अफगानिस्तान और पाकिस्तान में बराबर रूप से असरदार है। हक्कानी तालिबान के मिलिट्री स्ट्रेटजी के भी प्रमुख हैं। रिपोर्ट्स बताती हैं कि काबुल पर कब्जे के बाद से तालिबान ने हक्कानी को काबुल का सुरक्षा प्रभारी बना दिया है। अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने हक्कानी को अपनी मोस्ट वांटेड लिस्ट में रखा हुआ है जिस पर करीब 36 करोड़ रुपये का इनाम है। अनस हक्कानी
अनस तालिबान नेता हैं जो कतर स्थित समझौता वार्ता टीम के सदस्य रहे हैं। अनस को कविताएं लिखनी पसंद है। अनस हक्कानी, सिराजुद्दीन हक्कानी के भाई हैं। 2014 में अनस को गिरफ्तार कर लिया गया था लेकिन बाद में कैदियों की अदला-बदली में अनस को रिहा कर दिया गया था। हाल में अनस ने अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड का दौरा किया था और कहा था कि वह क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए हर संभव कोशिश करेंगे। जबीउल्लाह मुजाहिद जबीउल्लाह मौजूदा वक्त में तालिबान के प्रवक्ता हैं। जबीउल्लाह पहली बार 17 अगस्त 2021 को सावर्जनिक रूप से पेश हुए। इससे पहले वह लगातार तालिबान के पक्ष को दुनिया के सामने रखते रहे हैं। जबीउल्लाह 2007 में तालिबान के प्रवक्ता नियुक्त किए गए थे। इससे पहले वह अमेरिकी और अफगान सेना से लड़ चुके हैं।
सुहैल शाहीन सुहैल भी मौजूदा वक्त में तालिबान के प्रवक्ता हैं। वह कतर स्थित तालिबान के राजनीतिक ऑफिस के प्रवक्ता का कामकाज देखते हैं। वह पाकिस्तान में अफगानिस्तान के उप राजदूत रह चुके हैं। 1996-2001 तालिबान सरकार के दौरान वह सरकारी अखबार काबुल टाइम्स के एडिटर रह चुके हैं। सुहैल पश्तो, उर्दू, इंग्लिश, हिंदी सहित कई भाषाओं के जानकार हैं। मोहम्मद याकूब याकूब तालिबान के संस्थापक मोहम्मद उमर के बेटे हैं। वह मौजूदा वक्त में सुप्रीम लीडर हिबतुल्लाह अखुंदज़ादा के दो डिप्टी में से एक हैं। याकूब ने पाकिस्तान के कराची शहर में इस्लामिक शिक्षा ली है। 2016 में याकूब को अफगानिस्तान के 15 प्रदेशों का मिलिट्री प्रमुख बनाया गया था। इसके बाद ही याकूब को तालिबान की टॉप निर्णय लेनी वाली परिषद रहबरी शूरा में शामिल किया गया था। रिपोर्ट्स बताती हैं कि मोहम्मद याकूब के सऊदी अरब राजशाही परिवार से बेहतर संबंध हैं। शेर मोहम्मद अब्बास स्तनेकजई 58 साल के शेर मोहम्मद अब्बास स्तनेकजई अपने दोस्तों के बीच शेरू के नाम से जाने जाते हैं। अफगानिस्तान के लोगर प्रांत में इनका जन्म 1963 में हुआ था। इन्होंने भारत के देहरादून स्थित इंडियन मिलिट्री अकादमी में पढ़ाई की हुई है। देहरादून से ट्रेनिंग करने के बाद में इन्होंने अफगान सैनिकों को ट्रेनिंग दी है। मौजूदा वक्त में शेरू तालिबान के दोहा राजनीतिक कार्यालय के प्रमुख हैं। शेरू सोवियत-अफगान युद्ध में तालिबान की ओर से लड़ चुके हैं। 1996-2001 के दौरान अफगानिस्तान में तालिबान के शासन के दौरान शेरू उपविदेश मंत्री रहे हैं।

यूपी के 24 जिले में कोरोना के एक भी मरीज नहीं, वैक्सीनेशन में भी अव्वल

वैश्विक महामारी कोविड-19 की दूसरी लहर पर लगभग काबू पा चुके उत्तर प्रदेश वैक्सीनेशन के मामले में देश में अव्वल स्थान पर पहुंच चुका है। प्रदेश में कोविड वैक्सीनेशन का आंकड़ा 07 करोड़ 69 लाख 93 हजार के पार हो चुका है। अब तक छह करोड़ 46 लाख से अधिक नागरिकों ने कोविड से बचाव के लिए टीके की कम से कम एक खुराक प्राप्त कर ली है। यह देश के किसी एक राज्य में हुआ सबसे अधिक टीकाकरण है। आधिकारिक सूत्रों ने शनिवार को बताया कि प्रदेश के 24 जिले कोरोना से मुक्त हो चुके

है जिनमें अलीगढ़, अमेठी, अमरोहा, अयोध्या, बागपत, बलिया, बांदा, बस्ती, बिजनौर, चित्रकूट, देवरिया, फतेहपुर, गाजीपुर, गोंडा, हमीरपुर, हरदोई, हाथरस, ललितपुर, महोबा, मुजफ्फरनगर, पीलीभीत, रामपुर, शामली और सीतापुर शामिल है। यहां आज कोविड का एक भी मरीज शेष नहीं है। पिछले 24 घंटे में हुई टेस्टिंग में 63 जिलों में संक्रमण का एक भी नया केस नहीं पाया गया, जबकि 12 जिलों में इकाई अंक में मरीज पाए गए। वर्तमान में प्रदेश में एक्टिव कोविड केस की संख्या 300 से भी कम रह गई है। आज प्रदेश में कोरोना के कुल 250 मरीज है। कोरोना की रिकवरी दर 98.7 फीसदी है। शुक्रवार को दैनिक पॉजिटिविटी दर 0.01 प्रतिशत रही। सूत्रों ने बताया कि अब तक 07 करोड़ 32 लाख 18 हजार 111 कोविड सैम्पल की जांच की जा चुकी है। पिछले 24 घंटे में 02 लाख 31 हजार 390 कोविड सैम्पल की जांच की गई और 26 नए मरीजों की पुष्टि हुई। इसी अवधि में 15 मरीज स्वस्थ होकर डिस्चार्ज हुए। अब तक 16 लाख 86 हजार 323 लोग कोरोना संक्रमण से मुक्त होकर स्वस्थ हो चुके हैं।

मुखिया-सरपंच के बदल गए अधिकार, पंचायती राज विभाग ने सौंपी ये नई जिम्मेदारियां

पंचायत चुनाव में इस बार कई नजारे बदले-बदले से हैं। पांच साल के लिए ग्राम सत्ता के गठन की कवायद शुरू हो चुकी है। मुखिया और सरपंच पद के लिए पुराने और नए भागीदार अपनी ताल ठोक रहे हैं। लेकिन इस बार कई अधिकार और जिम्मेदारियां बदल गई हैं। ग्राम सत्ता के दोनों प्रमुख पदों मुखिया और सरपंच के दायित्वों का नए सिरे से निर्धारण कर दिया गया है। दोनों पदधारियों के लिए बहुत कुछ कटौती सा लग सकता है तो कई जिम्मेदारी बढ़ी हुई सी लगेगी। पंचायत चुनाव से पहले पंचायती राज विभाग ने नए सिरे से मुखिया व सरपंच के दायित्वों का निर्धारण कर उनकी जिम्मेदारी तय करते हुए निर्देशित किया है कि अब नए नियम के मुताबिक मुखिया को जहां ग्राम सभा और पंचायतों की बैठक बुलाने का अधिकार होगा, वहीं इनके जिम्मे विकास योजनाओं के लिए मिलने वाली पंजी की निगरानी की भी जिम्मेवारी होगी। इसके साथ ही सरपंच के जिम्मे गांव में सड़कों के रख-रखाव से लेकर सिंचाई की व्यवस्था, पशुपालन व्यवसाय को बढ़ावा देने जैसे कार्य भी शामिल होंगे।
मुखिया के जिम्मे होंगे कई नए कार्य पंचायती राज विभाग के अनुसार इस बार चुनाव जीतने वाले मुखिया को अब अपने कार्य क्षेत्र में एक वर्ष में कम से कम चार

बैठकें आयोजित करनी होंगी। बैठक के अलावा इनके पास ग्राम पंचायतों के विकास की कार्य योजना बनाने के साथ-साथ प्रस्तावों को लागू करने की जवाबदेही भी होगी। इसके अलावा ग्राम पंचायतों के लिए तय किए गए टैक्स, चंदे और अन्य शुल्क की वसूली के इंतजाम करना भी इनके जिम्मे होगा। सरपंचों को पंचायती राज व्यवस्था में तीन बड़े अधिकार दिए गए हैं। इसमें ग्राम पंचायत की बैठक बुलाने और उनकी अध्यक्षता करने के साथ ही अब ग्राम पंचायत की कार्यकारी और वित्तीय शक्तियां भी इनके पास रहेंगी।

PM मोदी इसी महीने जा सकते हैं अमेरिका, बाइडेन से होगी मुलाकात, एजेंडे में है चीन और अफगानिस्तान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस महीने यानी सितंबर के आखिरी सप्ताह में अमेरिका दौरे पर जाने की उम्मीद है। सरकार के टॉप सूत्रों की मानें तो प्रधानमंत्री सितंबर के आखिरी सप्ताह में वाशिंगटन डीसी और न्यूयॉर्क का दौरा कर सकते हैं। जो बाइडेन के राष्ट्रपति बनने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह पहला अमेरिका दौरा होगा। इंडियन एक्सप्रेस ने सूत्रों के हवाले से रिपोर्ट दी है कि फिलहाल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा रहा है और अगर अब तक की चर्चा के हिसाब से सबकुछ ठीक रहा तो प्रधानमंत्री मोदी 22 से 27 सितंबर के बीच अमेरिका के दौरे पर रहेंगे। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के बीच यह पहली फेस टू फेस मुलाकात होगी। इससे पहले ये दोनों नेता कम से कम तीन बार वर्चुअल समिट में मुलाकात कर चुके हैं। मार्च में क्वाड समिट, अप्रैल में क्लाइमेट चेंज समिट और इस साल जून में जी-7 समिट के दौरान ये दोनों नेता वर्चुअली मिल चुके हैं। जून में जी-7 समिट के दौरान प्रधानमंत्री ब्रिटेन की

यात्रा पर जाने वाले थे, मगर कोरोना की दूसरी लहर की वजह से उन्हें अपनी यात्रा कैंसिल करनी पड़ी थी, जिसके परिणामस्वरूप बाइडेन और मोदी की मुलाकात नहीं हो पाई थी। अफगानिस्तान में तेजी से बदल रहे हालात के मद्देनजर पीएम मोदी की यह यात्रा महत्वपूर्ण होगी। पीएम मोदी जो बाइडेन से मुलाकात के अलावा, अमेरिकी प्रशासन के शीर्ष अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकें भी कर सकते हैं। बताया जा रहा है कि अमेरिका दौरे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एजेंडा में अफगानिस्तान संकट और चीन का मुद्दा होगा। इस दौरे पर दोनों पक्षों के बीच चीन पर भी बात करने की उम्मीद है। साथ ही दोनों पक्ष हिंद-प्रशांत पर महत्वाकांक्षी एजेंडे पर काम करने की कोशिश करेंगे। क्वाड लीडर्स के शिखर सम्मेलन की भी वाशिंगटन डीसी में योजना बनाई जा रही है। माना जा रहा है कि करीब -करीब उसी समय पीएम मोदी की यात्रा हो रही है। बता दें कि इससे पहले आखिरी बार सितंबर 2019 में ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिका दौर पर गए थे, जब तत्कालीन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाउडी मोदी कार्यक्रम को संबोधित किया था। उसी कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में 'अबकी बार ट्रंप सरकार' का नारा दिया था, जो चुनाव में काम नहीं आया है और ट्रंप की हार हो गई।

SPORTS खेल जगत

दिल्ली कैपिटल्स ने श्रेयस अय्यर को दिया झटका, कप्तानी को लेकर किया बड़ा फैसला

आईपीएल 2021 के दूसरे चरण में भी दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पंत ही रहेंगे। इस बात की जानकारी बीसीसीआई के एक वरिष्ठ सूत्र ने समाचार एजेंसी पीटीआई को दी है। उन्होंने बताया, कप्तानी की घोषणा करना महज एक औपचारिकता

होगी, क्योंकि फ्रेंचाइजी की पहली पसंद ऋषभ पंत है। पिछले हफ्ते स्टार स्पोर्ट्स ने आईपीएल प्रबंधन की मदद से सीजन के लिए कुछ प्रोमो शूट किए। इस दौरान सभी टीमों के कप्तान मौजूद थे, जो इस समय इंग्लैंड में हैं और आईपीएल में अपनी टीम की अगुवाई करते हैं। इनमें विराट कोहली (आरसीबी), रोहित शर्मा (मुंबई इंडियंस), केएल राहुल (पंजाब किंग्स) और ऋषभ पंत (दिल्ली कैपिटल्स) भी थे।'पंत ही संभालेंगे बाकी मैचों में टीम की कमानसूत्र ने आगे कहा, 'अगर बीसीसीआई-आईपीएल को किसी अन्य कप्तान (दिल्ली कैपिटल्स) के बारे में पता होता तो यह प्रोमो शूट नहीं होता। इसलिए फ्रेंचाइजी इसकी घोषणा अभी करे या कुछ दिनों के बाद। पंत सीजन के बाकी बचे मुकाबलों में टीम की कमान संभालेंगे, इसकी पूरी संभावना है।' गौरतलब है कि अय्यर कंधे की चोट के कारण आईपीएल 2021 के पहले चरण में नहीं खेल पाए थे। अय्यर की गैरमौजूदगी में फ्रेंचाइजी ने पंत को टीम की कमान जिम्मेदारी सौंपी थी। मगर अय्यर अब पूरी तरह फिट हो गए हैं। मगर फ्रेंचाइजी ने पंत को ही दूसरे चरण में टीम की कमान सौंपी है। बता दें कि आईपीएल के 14वें सीजन के दूसरे चरण की शुरुआत 19 सितंबर से हो रही है। श्रेयस अय्यर पहले से ही यूएई में अपने फिटनेस कोच के साथ मौजूद हैं। दिल्ली पहले स्थान पर पंत की कप्तानी में आईपीएल 2021 के स्थगित होने तक दिल्ली कैपिटल्स आठ मैचों में छह जीत के साथ पहले स्थान पर है जबकि चेन्नई सुपर किंग्स पांच मैचों में जीत के साथ दूसरे नंबर पर काबिज है। वहीं, विराट कोहली की कप्तानी वाली आरसीबी पांच मैचों में जीत के साथ तीसरे स्थान पर है। बता दें कि दो मई तक कुल 29 मुकाबले खेले गए थे।अय्यर 2018 से टीम का कप्तानअय्यर ने 2018 से टीम की कमान संभाली है। उन्होंने बल्लेबाजी में खास प्रदर्शन किया है। 79 मैचों में उन्होंने 31.43 की औसत से 2200 रन बनाए हैं। युवा बल्लेबाज ने छह सीजन खेले, जिसमें से चार सीजन में 400 रन का आंकड़ा पार किया। 2019 में खिताब से चूकी दिल्ली की टीम की नजरें खिताब पर होगी।

कोहली ने सचिन से नहीं लिया सबक॰ ओवल में भी विकेट के पीछे दिया कैच, तेंदुलकर 17 साल पहले जूझे थे ऑफ साइड की गेंदों पर

टीम इंडिया का मध्यक्रम पिछले काफी समय से खराब फॉर्म से जूझ रहा है। इनमें क्रिकेट प्रशंसकों के लिए सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात कप्तान विराट कोहली का फॉर्म से बाहर होना है। दरअसल, कोहली ने पिछले 21 महीनों से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शतक नहीं लगाया। वहीं, इंग्लैंड में जारी टेस्ट सीरीज में भी उनका बल्ला लगातार शांत है। कोहली चौथे टेस्ट की पहली पारी में 50 रन बनाकर विकेट के पीछे कैच थमा बैठे, जबकि इससे पहले पांच पारियों में भी ऑफ साइड की गेंदों को कवर पर खेलने के दौरान स्लिप में या विकेटकीपर के हाथों कैच हुए। जिस समस्या से विराट कोहली फिलहाल जूझ रहे हैं, 2003-04 में उसी समस्या से टीम इंडिया के मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर

भी परेशान थे। दरअसल, तेंदुलकर उस दौरान लगातार ऑफ साइड की गेंदों को कवर में खेलने की कोशिश में थे। इसके चलते दूसरे टेस्ट की पहली पारी में वह गिलक्रिस्ट को कैच थमा बैठे। ऑस्ट्रेलिया ने पकड़ ली थी तेंदुलकर की कमजोरीइसके बाद ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों ने तेंदुलकर की इस कमजोरी को तुरंत पकड़ा और उन्हें ऑफ साइड पर लंबी गेंद फेंकनी शुरू कर दी। तीसरे टेस्ट तक तो तेंदुलकर मजबूरन पैर निकालकर कवर ड्राइव खेल कर आउट होते रहे। तेज गेंदें उनके बल्ले का किनारा लेकर विकेटकीपर एडम गिलक्रिस्ट के दस्तानों में समाती रहीं। दोनों ही पारियों में तेंदुलकर विकेट के पीछे लपके गए। तीन मैचों में उनके खाते में सिर्फ 88 रन ही जुड़ पाए थे। अपनी पांच पारियों में वह दो बार शून्य के स्कोर पर आउट हुए। ऐसे में बार-बार एक ही तरह आउट होने के बाद सचिन ने अपनी तकनीक में एक बड़ा बदलाव किया और अगले ही मैच में उनके बल्ले से दोहरा शतक निकला। क्या था तेंदुलकर की तकनीक में बदलाव?भारतीय टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने हाल ही में विराट कोहली को सलाह दी थी कि इंग्लैंड के खिलाफ वह जो गलती कर रहे हैं, उससे पार पाने के लिए वह 2003-04 की सचिन तेंदुलकर की तकनीक से मदद लें। उन्होंने कहा कि जो सचिन ने सिडनी में किया, कोहली को भी वही करना चाहिए। विकेट के पीछे आउट होने से बचने की अपनी तकनीक का खुद सचिन ने भी हाल ही में एक टीवी इंटरव्यू में जिक्र किया। उन्होंने बताया कि सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर 2003 में उन्होंने मैदान में उतरते ही फैसला कर लिया था कि पारी में वो ऑफ की तरफ आती गेंदों पर कवर ड्राइव नहीं लगाएंगे। सचिन ने 436 गेंदें खेलीं, एक भी कवर ड्राइव नहीं लगायातेंदुलकर ने बताया था- "जब मैंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपने आउट होने के तरीकों पर अपने भाई से बात की, तो उन्होंने कहा कि तुम्हारी बल्लेबाजी में कोई कमजोरी नहीं, सिर्फ शॉट सेलेक्शन में दिक्कत है।"सचिन के मुताबिक, इस सलाह के बाद उन्होंने गेंदबाजों के खिलाफ मोर्चा लेने के लिए अनुशासन को हथियार बनाया। टेस्ट मैच में सचिन को भाई की तरफ से नॉट आउट रहने की चुनौती मिली और इसके बाद सचिन ने पवेलियन लौटने से बचने के लिए कवर ड्राइव ही नहीं खेला।

पीएम मोदी ने पदकवीर मनीष और सिंहराज को दी बधाई, बोले- भारतीय खेलों के लिए विशेष क्षण

टोक्यो पैरालंपिक में भारतीय निशानेबाज मनीष नरवाल और सिंहराज अडाना ने पुरुषों की 50 मीटर पिस्टल स्पर्धा एसएच-1 स्पर्धा के फाइनल में कमाल कर दिया। मनीष ने इस स्पर्धा के फाइनल में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। वहीं सिंहराज अडाना ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक पर कब्जा किया। मनीष ने खिताबी मुकाबले में 218.2 का स्कोर किया और वह टॉप पर रहे। जबकि,
सिंहराज ने जबकि सिंहराज ने 216.7 अंक बटोरते हुए सिल्वर मेडल जीता। दोनों खिलाड़ियों की ऐतिहासिक उपलब्धि से पीएम नरेंद्र मोदी काफी खुश हुए और दोनों एथलीटों को पदक जीतने की बधाई दी। स्वर्ण पदक जीतने वाले मनीष नरवाल को प्रधानमंत्री ने बधाई देते हुए ट्वीट कर लिखा,
टोक्यो पैरालंपिक में भारत का गौरवशाली प्रदर्शन जारी है, युवा और प्रतिभावान मनीष नरवाल की शानदार उपलब्धि, मनीष का गोल्ड मेडल जीतना भारतीय खेलों के लिए विशेष क्षण है, उन्हें बधाई। आने वाले भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं। वहीं, रजत पदक जीतने वाले सिंहराज अडाना को बधाई देते हुए पीएम मोदी ने कहा,
उत्कृष्ट प्रदर्शन सिंहराज इसे फिर से करने में सफल रहे, उन्होंने इस बार मिक्स्ड 50 मीटर पिस्टल एसएच1 स्पर्धा में एक और पदक जीता, उनके इस करिश्मे से भारत खुश है, सिंहराज को बधाई। उन्हें भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं। स्वर्ण पदक जीतने के बाद मनीष नरवाल काफी खुश हुए इस दौरान उन्होंने कहा, मैं अपने परिवार, कोचों, समाज और सभी भारतीयों को अपने पदक के लिए धन्यवाद देता हूं।

देश परदेश

तालिबान का खौफ-एयरपोर्ट पर ही करा दिए बेटियों के निकाह और भेज दिया विदेश, अमेरिका बता रहा मानव तस्करी

अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद सबसे ज्यादा खतरा महिलाओं और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के ऊपर माना जा रहा है। वैसे तो तालिबान ने महिलाओं को उनके अधिकार देने की बात कही थी, लेकिन खुद अफगान नागरिकों को इस संगठन की बातों पर भरोसा नहीं है। इसीलिए कई अफगान परिवार अपने घरों को छोड़कर दूसरे देश चले गए। इस बीच खुलासा हुआ है कि जो परिवार अफगानिस्तान छोड़ने में सफल नहीं हो पाए, उन्होंने अपने घर की लड़कियों को देश से निकालने के लिए उनकी शादी एयरपोर्ट पर ही करा दी। वह भी उन लोगों से जिन्हें अफगानिस्तान छोड़ने और दूसरे देश में शरण लेने की इजाजत मिली थी। अमेरिकी अधिकारियों ने इस बारे में अपने विदेश मंत्रालय को अलर्ट किया है। अफसरों का कहना है कि कई परिवारों ने अपनी बेटियों की शादी सीधा एयरपोर्ट पर उन लोगों से करा दी, जिन्हें अमेरिका में शरण लेने की इजाजत मिली थी। इसके जरिए वे परिवार अपनी लड़कियों को तालिबान से बचाकर दूसरे देश पहुंचाना चाहते थे। हालांकि, अब तक जो निरीक्षण कार्यक्रम चला है, उसमें कई लड़कियां और महिलाएं सामने आई हैं जिन्होंने जबरदस्ती शादी की बात कबूली है।मददगारों को निकालने की थी अमेरिका की योजनाबता दें कि अमेरिका ने बीते एक महीने में सबसे ज्यादा अफगान नागरिकों को रेस्क्यू किया है। इनमें अधिकतर अमेरिकी सेना के मददगार और उनके परिवार हैं। इन लोगों से पहले ही वादा किया गया था कि अमेरिकी सेना के अफगानिस्तान छोड़ने के साथ ही उन्हें देश में शरण दी जाएगी। निकासी कार्यक्रम के दौरान भी अमेरिका ने अपने मददगारों को ही प्राथमिकता दी और उन्हें परिवार के साथ सुरक्षित निकाल लिया। हालांकि, अब सामने आया है कि उनके साथ कई ऐसे लोग भी अमेरिका के निकासी केंद्रों में पहुंच गए हैं जो मददगारों के परिवारों का हिस्सा नहीं थे। अमेरिकी अधिकारियों ने मीडिया ग्रुप सीएनएन को बताया कि अमेरिका के निकासी कार्यक्रम के तहत अफगानिस्तान से निकाले गए लोगों को पहले दूसरे देशों में रखे जाने की योजना है।
इनमें कतर, यूएई और कुछ अन्य नाटो देश शामिल हैं। इन देशों में पहले अफगानों की सख्त जांच किए जाने के निर्देश हैं। यूएई में जारी ऐसी ही जांच के दौरान महिलाओं की जबरदस्ती की गई शादी का वाकया सामने आया। कुछ मामलों में तो यह भी पता चला कि लड़कियों के परिवार ने शादी के लिए उन लोगों को लाखों की रकम भी दी, जिन्हें निकासी कार्यक्रम के तहत अफगानिस्तान से निकाला जाना था। अफगानों की जांच में अमेरिका बरत रहा सावधानीअमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने शुक्रवार को इस मुद्दे पर कहा, "हम मानव तस्करी के मुद्दे को गंभीरता से लेते हैं और पूरी दुनिया में खतरे में पड़े लोगों की सुरक्षा के लिए भी प्रतिबद्ध हैं।
हम अमेरिकी सरकार और अपने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय साझेदारों से भी लगातार संपर्क में हैं, ताकि अफगान नागरिकों के संभावित मानव तस्करी के मामलों का पता लगाया जा सके और इसके पीड़ितों को सुरक्षा दी जा सके।

अमेरिका-20 सितंबर से लग सकती है बूस्टर डोज, सिर्फ फाइजर वैक्सीन के साथ शुरु हो सकता है अभियान

फाइजर व बायोटेक द्वारा बनाई गई कोरोना वैक्सीन अमेरिका में लोगों को बूस्टर डोज के तौर पर दी जा सकती है। व्हाइट हाउस इसकी तैयारी में जुट गया है। सूत्रों के मुताबिक, कोविड-19 की बूस्टर डोज योजना इसी महीने से शुरू हो सकती है। 20 सितंबर को 100 मिलियन बूस्टर शॉट लांच कर सकते हैं बाइडनजानकारी के मुताबिक, राष्ट्रपति जो बाइडन 20 सितंबर को 100 मिलियन बूस्टर शॉट्स लांच कर सकते हैं, लेकिन फाइजर के अलावा अन्य वैक्सीन निर्माता कंपनियां इस मांग को पूरा नहीं कर पा रहीं हैं। अभी तक केवल मॉडर्ना की ओर से बूस्टर शॉट्स के लिए आंकड़े जमा कराने शुरू किए गए हैं। कंपनी ने बताया कि शुक्रवार तक उसने पूरा डाटा उपलब्ध करा दिया था। सूत्रों की मानें तो फाइजर के बूस्टर शॉट के लिए विशेषज्ञों का एक पैनल 17 सितंबर को बैठक सकता है।बूस्टर शॉट की मांग ज्यादा आपूर्ति कमव्हाइट हाउस के मुख्य चिकित्सा सलाहकार डॉ. एंथोनी फौजी ने इंग्लिस चैनल को दिए गए साक्षात्कार में बताया कि 20 सितंबर तक मॉडर्ना की पूरी जानकारी उपलब्ध होना मुश्किल है, हो सकता है कि उसे कुछ और सप्ताह लग जाएं। उधर, जॉनसन एंड जॉनसन ने भी अभी तक बूस्टर शॉट के लिए आवेदन नहीं किया है। जबकि, पिछले सप्ताह बयान दिया था कि उसकी इस विषय पर एफडीए के साथ बात चल रही है।अधिकारियों ने दी फिलाहल योजना टालने की सलाहन्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार अधिकारियों ने व्हाइट हाउस को सलाह दी है कि आम जनता के लिए इस महीने से बूस्टर डोज उपलब्ध कराने के फैसले को फिलहाल टाल दिया जाए। बाइडन प्रशासन की बढ़ रही चिंताजैसे-जैसे डेल्टा प्लस वैरिएंट संक्रामक हो रहा है बाइडन प्रशासन की चिंता भी बढ़

रही है। क्योंकि, कई ऐसे मामले सामने आ रहे हैं, जिसमें वैक्सीन लगवा चुके लोग संक्रमित हो रहे हैं। यह इस बात का संकेत है कि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली फिर से कमजोर हो रही है। इसीलिए बाइडन प्रशासन पूरी तरह टीकाकरण करा चुके लोगों को बूस्टर शॉट देने की तैयारी में है। व्हाइट हाउस के प्रवक्ता ने कहा कि हम एफडीए व सीडीसी के दिशानिर्देशों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। एक बार अनुमति मिलने के बाद हम अमल के लिए तैयार हैं।

रूस- राष्ट्रपति पुतिन ने कहा, अफगानिस्तान को तोड़ने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा, अफगानिस्तान के विघटन में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। अगर ऐसा होता भी है तो वहां कोई बात करने वाला भी नहीं है। इससे बेहतर यही है कि तालिबान पहले सभ्य समाज में शामिल हो, ताकि उनसे आसानी से बात की जा सके, सवाल पूछे जा सकें।समाचार एजेंसी स्पूतनिक की रिपोर्ट के मुताबिक उन्होंने ईस्टर्न इकोनॉमिक फोरम की बैठक में कहा, तालिबान असल में पश्तून आदिवासियों का समूह है, जबकि अफगानिस्तान में इस्लामिक स्टेट सहित तमाम कट्टरपंथी समूह मौजूद हैं। ऐसे में वहां कोई एक इस तरह का समूह नहीं जिससे किसी मसले पर बातचीत कर ठोस नतीजे निकाले जा सकें।बहरहाल, मोटे तौर पर इतना साफ है कि रूस तालिबान के खिलाफ नहीं है और अफगानिस्तान में तालिबानी सरकार का विरोध नहीं करेगा।

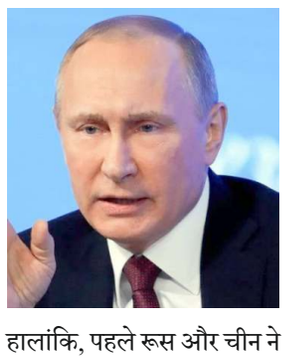

हालांकि, पहले रूस और चीन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में तालिबान के संदर्भ में पारित एक प्रस्ताव पर मतदान में भाग नहीं लेकर तालिबान को लेकर अमेरिका और पश्चिमी देशों से दूरी बनाई थी।मान्यता नहीं, साथ देगा ब्रिटेनब्रिटेन के विदेश सचिव डोमिनिक राब ने शुक्रवार को कहा कि ब्रिटेन तालिबान सरकारी को मान्यता नहीं देगा। हालांकि, उन्होंने कहा कि तालिबान के सहयोग के बिना काबुल से करीब 15,000 लोगों को निकालना संभव नहीं था।ऐसे में हम तालिबान से सीधे बातचीत और संबंध बनाए रखने के महत्व को समझते हैं। दो दिन के दौरे पर पाकिस्तान पहुंचे राब ने शुक्रवार को पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी से अफगानिस्तान पर चर्चा की। राब प्रधानमंत्री इमरान खान व पाक सेना प्रमुख कमर जावेद बाजवा से भी मिले।ब्रिटेन ने शुरू की द्विपक्षीय राजनयिक चर्चाराब अफगानिस्तान के आस-पास के देशों का दौरा कर रहे हैं। पाकिस्तान पहुंचने से पहले राब ने दोहा में कतर के विदेश मंत्री से मुलाकात की थी।

फ़िल्म "स्ट्रीट लाइट" तेलुगु और हिंदी में सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार

फ़िल्म का "स्ट्रीट लाइट" टीजर हुआ आउट, जल्द होगा ट्रेलर लॉन्च, मिला सेंसर सर्टिफिकेट

मूवी मैक्स के बैनर तले प्रसिद्ध निर्माता और वितरक श्री ममीडाला श्रीनिवास द्वारा निर्मित फ़िल्म "स्ट्रीट लाइट" तेलुगु और हिंदी में सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार है। फ़िल्म का टीजर आउट हो गया है जिसे काफी पसंद किया जा रहा है और अब जल्द ही इसका ट्रेलर लॉन्च किया जाएगा। फ़िल्म को सेंसर सर्टिफिकेट भी मिल गया है। इस फ़िल्म में तान्या देसाई, अंकित राज, काव्या रेड्डी और वरिष्ठ नायक विनोद कुमार ने अभिनय किया है। गौरतलब है कि यह ओरिजिनल हिन्दी मूवी है। हिन्दी ट्रेड के लिए सर्टिफिकेट मिला है। यह फिल्म तेलगु से हिन्दी में डब की हुई नहीं है।

निर्माता अपनी फिल्मों को सिनेमाघरों में रिलीज करने के लिए 'थिएटर बचाओ' का नारा भी लेकर आए हैं।

निर्माता ममीडाला श्रीनिवास का कहना है "हिंदी दर्शक हमेशा कुछ नया पसंद करते हैं। क्राइम, लव, रोमांस, फैमिली इमोशन्स इस मैसेज ओरिएंटेड फिल्म का हिस्सा हैं। फिल्म की पृष्ठभूमि इसपर आधारित है कि कैसे आपराधिक विचार और यौन विकृतियां बदलती हैं, खासकर स्ट्रीट लाइट के नीचे अंधेरे में होने वाली घटनाओं के साथ।

यह रिवेंज ड्रामा एक रहस्यपूर्ण कहानी है कि कैसे एक युवा महिला अपने अपराध जीवन का आनंद लेती है और निर्दोष लोगों के जीवन के साथ खेलती है। फिल्म को तेलुगु और हिंदी दोनों में एक साथ शूट किया गया था। पिक्चर को सेंसर सर्टिफिकेट मिल गया है।

निर्देशक विश्व प्रसाद ने बहुत मेहनत की। टीजर को सपोर्ट करने के लिए दर्शकों का शुक्रिया।

हालाँकि हमारे पास मूवी मैक्स, ओटीटी नामक एक कंपनी है, हम काफी लोगों से हमारा परिचय कराने से पहले अपनी फिल्म को ओटीटी में रिलीज़ करना चाहते थे। लेकिन ओटीटी केवल कुछ के लिए आजीविका प्रदान करता है। मैं सभी से नम्रतापूर्वक आग्रह करता हूं कि वर्तमान स्थिति को देखते हुए अपनी फिल्मों को सिनेमाघरों में इस विचार के साथ रिलीज करें कि एक ही थिएटर कई लोगों को आजीविका प्रदान करेगा। साथ ही, मेरी ओर से हम अपनी फिल्म को सिनेमाघरों में रिलीज कर रहे हैं ताकि 'थिएटर बचाओ' का नारा मेरे साथ शुरू हो सके।

फिल्म बहुत अच्छी बनी है। पोस्ट-प्रोडक्शन का जश्न मनाते हुए, हमारी "स्ट्रीट लाइट" फिल्म को हिंदी में सेंसर मिल गया है और जल्द ही तेलुगू सेंसर भी मिल जाएगा। ट्रेलर जल्द ही आ रहा है। थियेटर में रिलीज होने के बाद 'स्ट्रीट लाइट' को ओटीटी में रिलीज किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मैं दिल से चाहता हूं कि दर्शक हमारी फिल्म को देखें।

इस फ़िल्म में मुख्य कलाकारों में तान्या देसाई, अंकित राज, सीनियर हीरो विनोद कुमार, चित्रम श्रीनु, धनराज, शाकालाका शंकर, ईश्वर, काव्या रेड्डी, वैभव, कोंडा बाबू, साई कीर्तन, डॉ परमहंस, पवित्र, बालाजी नागलिंगम का नाम उल्लेखनीय है।

विश्व द्वारा निर्देशित इस फ़िल्म के निर्माता ममिडाला श्रीनिवास, डीओपी रवि कुमार, संगीतकार विरिंची,

एडिटर शिव, कला निर्देशक एस श्रीनिवास, फाइट मास्टर निखिल, कोरियोग्राफर पॉल मास्टर और स्टूडियो यू एंड आई है।

भोजपुरी फिल्म स्टार और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, मुंबई के महासचिव सुदीप पांडे एनजीओ शुरू करने जा रहे है

लोगों की मदद के लिए फिल्म स्टार सुदीप पांडे अपने स्व.पिता के नाम एनजीओ शुरू करने जा रहे है

भोजपुरी फिल्म स्टार और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, मुंबई(महाराष्ट्र) के महासचिव, सुदीप पांडे अपने दिवंगत पिता श्री उपेंद्र नाथ पांडे के नाम पर 'यू एन पांडे फाउंडेशन' एक एनजीओ यानि सामाजिक संस्था शुरू करने जा रहे हैं,जोकि जमशेदपुर (झारखण्ड) में उनके माता-पिता के आवास से चलाया जाएगा।जिसके लिए वही पर बुधवार १ सितम्बर २०२१ को एक प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन सुदीप पांडे द्वारा किया गया था। इस अवसर पर सुदीप पांडे ने कहा,

"मुझे खुशी है कि जमशेदपुर के मीडिया, उद्यमियों और एनजीओ प्रमोटरों जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों के मेरे दोस्तों ने जरूरतमंदों की मदद करने के इस नेक काम में मेरा समर्थन करने के लिए खुशी-खुशी सहमति जताई है। मुझे लगता है कि यह मेरे माता-पिता को सच्ची श्रद्धांजलि होगी, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में हमेशा गरीबों की मदद की है।"

इसके अलावा वे अपने पिता के नाम पर एक फिल्म कंपनी शुरू कर रहे हैं, जिसके तहत पारिवारिक व सामाजिक संदेश देनेवाली फिल्में बनाएंगे। और 'यू एन पांडे फाउंडेशन' की जल्द ही वेब साईट भी लॉन्च करेंगे। वैसे सुदीप पांडे ने कुछ महीने पहले ही कोविड की दूसरी लहर के दौरान अपने माता-पिता दोनों को खो दिया था और तब से वे बहुत दुखी होने के बाद अब वे जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं और समाज में लोगों की मदद करना चाहते हैं। इसलिए सामाजिक संस्था की शुरुवात करने जा रहे है। जिसके लिए वहाँ लोगों ने उनकी सराहना की।

दाधीच समाज द्वारा अमृतरुपई अन्नसेवा के प्रकल्प द्वारा अन्न वितरण

मुंबई।समाज मुंबई का ५२ वे वर्ष में अमृतरुपी अन्न सेवा के प्रकलप के द्वारा ३५० परिवारों को राशन किट मुफ्त वितरण हनुमान नगर, कांदिवली पूर्व में किया गया। जिसके तलहटी४ किलो चावल, १ कि.दाल,१ कि.शक्कर,नमक आदि किट बांटी गई।मुख्यअतिथि विधायक श्री अतुल भातखळकर नेसमाज द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की प्रशंसाकी जिसमें मुफ्त वैकसिनेशन भी शामिल है।दाधीच समाज के कार्यकारिणी सदस्यों में अध्यक्ष राजेश शर्मा, उपाध्यक्ष मधुसुदन व्यास, विजय मिश्रा, अंजनी कुमार दाधीच, सुशिल दाधीच, अशोक मिश्रा, पंकज रतावा, श्रीमति अनुपमा दाधीच इत्यादि उपस्थित रहे।

सिनेमाघर-कंगना की 'थलाइवी' को नहीं मिली मल्टीप्लेक्स में जगह, अभिनेत्री ने गैंगअप करने का लगाया आरोप

बॉलीवुड क्वीन कंगना रणौत अपनी आगामी फिल्म 'थलाइवी' के साथ बिलकुल तैयार हैं। तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता के जीवन पर आधारित ये फिल्म 10 सितम्बर को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। लेकिन अपनी फिल्म 'थलाइवी' की रिलीज से पहले कंगना रणौत को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। दरअसल कंगना की आगमी फिल्म्स को मल्टीप्लेक्स थिएटर में जगह नहीं मिली है। कंगना अपनी फिल्म को लेकर मल्टीप्लेक्स के मालिकों पर काफी गुस्सा है। अभिनेत्री का कहना है कि जानबूझ कर उन्हें कम स्क्रीन दी जा रही हैं।सोशल मीडिया पर पोस्ट कर लगाई क्लासकंगना ने एक के बाद एक सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए मल्टीप्लेक्स सिनेमा के मालिकों के प्रति अपनी नाराजगी जाहिर की है, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने उनसे गुजारिश की है कि वो इस मुश्किल घड़ी में उनका साथ दें। कंगना ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'इस मुश्किल घड़ी में एक-दूसरे का साथ दें। कुछ ऐसी फिल्में हैं जो थिएटर में रिलीज होने का दम रखती हैं लेकिन उन्हें सिनेमाघरों में रिलीज नहीं किया जा रहा है। कंगना रणौत ने मल्टीप्लेक्स सिनेमा के मालिकों पर गैंगअप करने का आरोप भी लगाया है। उनका कहना है कि फिल्म के निर्माताओं ने काफी चीजों के लिए समझौता करते हुए 'थलाइवी' को सिनेमाघरों में रिलीज करने का रिस्क लिया है और ये सिर्फ लोगों के प्यार से ही मुमकिन हो पाया है'।

गुमनाम सितारे-70 के दशक की बोल्ड अभिनेत्री थीं जहीरा, फिल्में छोड़ हो गईं गुमनाम, अब कुछ अता पता भी नहीं

फिल्म इंडस्ट्री में कई ऐसी हीरोइनें आईं जिन्होंने बॉलीवुड में कदम रखते ही खूब नाम कमाया। हर तरफ इनके अभिनय की चर्चा होने लगी। लेकिन दो-चार फिल्में करके ही वो ऐसी गायब हुईं कि उनका आजतक कोई सुराग नहीं मिला। आज हम बात करेंगे ऐसी ही एक एक्ट्रेस जहीरा की। जहीरा 70 के दशक की बोल्ड एक्ट्रेस में से एक थीं।जेम्स बॉन्ड सीरीज में किया कामजहीरा ने 1969 में आई जेम्स बॉन्ड फिल्म ऑन हर मेजेस्टी सीक्रेट सर्विस से डेब्यू किया। जिसमें उन्होंने एक भारतीय लड़की की भूमिका निभाई। ये फिल्म सुपरहिट हुई थी। इसके बाद जहीरा ने करीब 20, 21 फिल्मों में ही अभिनय किया और हमेशा के लिए इंडस्ट्री छोड़ दी। जहीरा का मानना था कि करियर का ग्राफ गिरने से पहले ही एक्टिंग छोड़ देना ठीक होता है। जहीरा ने अपने करियर की शुरुआत साइड रोल से शुरू की थी। 1969 में करियर की शुरुआत करने वाली जहीरा को बॉलीवुड में परवीन बाबी की हमशक्ल माना गया। लेकिन इसका उन्हें कुछ खास फायदा नहीं मिला।

उल्टा परवीन बाबी का लोकप्रियता में चार चांद लगे।

करीब छहि फल्मों में साइड रोल करने के बाद जहीरा ने 1974 में आई फिल्म 'कॉल गर्ल' में लीड रोल किया था। हालांकि फिल्म ज्यादा सफल नहीं हुई थी। फिल्म 'नौकरी' में जहीरा ने राजेश खन्ना के साथ काम किया था। सुपरस्टार राजेश खन्ना के साथ काम करके भी जहीरा का सितारा नहीं चमका। जहीरा को जब ज्यादा काम नहीं मिला तो उन्होंने कुछ बी ग्रेड फिल्मों में भी काम किया। जहीरा ने फिल्म 'गैंबलर' में देव आनंद के साथ काम किया था। ये फिल्म हिट तो हुई लेकिन जहीरा को कोई खास पहचान नहीं मिल पाई। जहीरा सेंसेशनल रोल करने से भी पीछे नहीं हटीं। उन्होंने फिल्म 'धर्मात्मा' में फिरोज खान के साथ बेहद बोल्ड सीन दिए थे। हिंदी फिल्मों के अलावा जहीरा ने कुछ पंजाबी फिल्मों में भी काम किया। हिट होने के लिए जहीरा ने फिल्मों में स्मोक, शराब और बोल्ड ड्रेस तक पहन डाली। लोगों का मानना था कि वो अच्छी एक्टिंग नहीं कर पातीं लेकिन स्क्रीन पर अच्छी दिखती हैं। इसलिए डायरेक्टर उन्हें फिल्म में साइड रोल के लिए साइन करते थे। 10 साल फिल्मों में हाथ आजमाने के बाद जब जहीरा को सफलता नहीं मिली तो उन्होंने फिल्म इंडस्ट्री छोड़ने का फैसला कर लिया।

जहीरा लंदन में पली-बढ़ी थीं इसलिए उन्होंने वापस लंदन जाने का फैसला लिया। इस बात की जानकारी उन्होंने अपने फैंस को दी कि वो एक्टिंग छोड़कर लंदन शिफ्ट हो रही हैं।जहीरा इसके बाद ऐसी गायब हुईं कि आजतक उनका कोई सुराग नहीं मिल पाया। वो क्या करती हैं कैसी दिखती हैं किसी को कोई जानकारी नहीं है।

सलाह-राज कपूर ने जब ऋषि कपूर से कहा- तुम्हारा पिता हूं, सेक्रेटरी नहीं, जानें क्या है वो किस्सा

बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता ऋषि कपूर आज भले ही हमारे बीच न हों, लेकिन अपनी फिल्मों के जरिए उन्होंने लोगों के मन में अपनी एक अलग जगह कायम की है। आज ऋषि कपूर का 69वां जन्मदिन है। ऋषि कपूर ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत बचपन में ही कर दी थी। उन्होंने अपने पिता राज कपूर की फिल्म मेरा नाम जोकर में काम किया था। इसके बाद उन्होंने बॉबी, हिना, अमर अकबर एंथोनी सहित कई फिल्मों में अपने अभिनय का शानदार प्रदर्शन किया। बता दें कि ऋषि कपूर को फिल्म जगत में लाने वाले उनके पिता राज कपूर ही थे।राज कपूर ने कहा सेक्रेटरी नहीं हूं तुम्हाराऋषि कपूर ने एक मीडिया बातचीत के दौरान ये बताया था कि उनके पिता उन्हें सीधे तौर पर ये सिखाते थे कि मैंने तुम्हें लॉच किया है, लेकिन तुम्हारा करियर अपने खुद के हाथों में हैं। ऋषि कपूर ने कहा मुझे इस बात पर बहुत गर्व है कि मैं एक ऐसे फिल्म परिवार से ताल्लुक रखता हूं, जिसका सिनेमा के इतिहास में एक बड़ा योगदान है। ऋषि कपूर ने एक किस्सा साझा करते हुए बताया कि उनके पिता की सीख आज उन्हें बहुत काम आ रही है और वहीं वो अपने बेटे रणबीर कपूर को भी सिखाते हैं।

सिद्धार्थ शुक्ला निधन: एकता कपूर ने सिड को इस तरह किया याद, लिखा- मैं सुन्न हूं

अभिनेता सिद्धार्थ शुक्ला के निधन से बॉलीवुड और टीवी जगत के लोग सदमे में हैं। हर कोई उनको अपने तरीके से याद कर रहा है। सिड के फैंस भी सोशल मीडिया के जरिए उनके निधन पर लगातार सोक संवेदनाएं व्यक्त कर रहे हैं और उनको याद कर रहे हैं। एकता कपूर भी सिद्धार्थ शुक्ला के निधन से गहरे सदमे में हैं। उन्होंने लिखा कि सिड के निधन से वो सुन्न हैं।

सोशल मीडिया पर सिद्धार्थ की मौत के साथ ही यूजर्स सुशांत सिंह राजपूत की मौत को भी याद करने लगे हैं। इसकी वजह है कि इन दोनों ही अभिनेताओं ने अपने करियर की शुरुआत टीवी से की और उसके बाद फिल्मों की ओर बढ़े। एकता कपूर ने सिद्धार्थ को अंतिम विदाई देते हुए भावुक नोट शेयर किया है।

उन्होंने सिद्धार्थ शुक्ला की फोटो भी शेयर की है।

आपको बता दें कि सिद्धार्थ शुक्ला ने एकता कपूर के ओटीटी प्लेटफॉर्म ऑल्ट बालाजी के लिए बनी 'ब्रोकन बट ब्यूटीफुल 3' सीरीज से हाल ही में डिजिटल डेब्यू किया था।एकता ने सिड की एक तस्वीर साझा करते हुए लिखा है, 'कल से स्तब्ध हूं। पिछले साल की ही तरह खालीपन सा महसूस हो रहा है। कभी सोचा नहीं था कि 'अगस्त्य' की कहानी का अंत ऐसा होगा।

परिवार को दुख की घड़ी में साहस मिले। भगवान तुम्हारी आत्मा को शांति दे सिद्धार्थ।' आपको बता दें कि एकता कपूर का सिद्धार्थ शुक्ला और सुशांत दोनों ही अभिनेताओं से करीब का रिश्ता रहा था।

उन्होंने ही सुशांत को टेलीविजन पर पहला ब्रेक 'किस देश में है मेरा दिल' शो के साथ दिया था।आपको बता दें कि सिद्धार्थ शुक्ला 2 सितंबर को अपने घर में अचेत अवस्था में मिले थे और उन्होंने अस्पताल ले जाने से पहले ही दम तोड़ दिया था।

बॉलीवुड-इन हिट फिल्मों से अचानक हटा दिए गए थे ये बड़े कलाकार, यहां देखें नाम

बॉलीवुड इंडस्ट्री में कई ऐसे बड़े सितारे हैं, जिन्होंने इंडस्ट्री को हिट-सुपरहिट फिल्में दी हैं। हालांकि, इस मुकाम तक पहुंचने के लिए इन सितारों को कड़ी मेहनत भी करनी पड़ती है। बीते सालों में ऐसी कई फिल्में रिलीज हुई है, जिसने फिल्म जगत में नए रिकॉर्ड कायम किए हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इनमें से बहुत सी फिल्मों में नजर आए कलाकार इन फिल्मों के लिए पहली पसंद नहीं थे। दरअसल, पहले ये फिल्में किसी और कलाकार की झोली में थी, लेकिन किसी कारणवश फिल्मों में पहले कास्ट हुए कलाकारों को अचानक रिप्लेस कर दिया गया। आइए जानते हैं ऐसी ही कुछ फिल्मों और कलाकारों के बारे में- अर्जुन कपूर- कबीर सिंहशाहिद कपूर की ब्लॉकबस्टर फिल्म कबीर सिंह अर्जुन कपूर के लिए गेम चेंजर साबित हो सकती थी। दरअसल, निर्माता ने इस फिल्म में अर्जुन के लिए मुख्य भूमिका पर विचार कर रहे थे। इस बारे में खुद अभिनेता ने एक कार्यक्रम में बताया था कि, "यह उस मुकाम तक नहीं पहुंचा था, जहां मेरे पास फिल्म चुनने या नहीं चुनने का विकल्प था। जब फिल्म के निर्माता फिल्म के राइट्स हासिल कर रहे थे, तब उनके विचार में मेरा ही नाम था। लेकिन बाद में निर्देशक संदीप वांगा शाहिद से मिले और उन्होंने साथ में फिल्म करने का फैसला किया।गोविंदा - जग्गा जासूसफिल्म जग्गा जासूस के सेट से सामने आई गोविंदा और रणबीर कपूर की तस्वीरें देख फैंस दोनों को साथ देखने के लिए काफी उत्साहित थे। लेकिन दुर्भाग्य से फिल्म से उनका सीन काट दिया गया। बाद में, रणबीर ने एक इंटरव्यू में गोविंदा से माफी मांगी। रणबीर ने कहा था कि दुर्भाग्य से पूरा ट्रैक काट दिया गया है।

गलती बसु और मेरी है। हमने इस फिल्म को बिना पूरी स्क्रिप्ट के बहुत पहले से ही शुरू कर दिया था।

ICOMOS इंडिया, विरासत और संस्कृति के क्षेत्र में एक बड़ा कदम

आर्किटेक्ट धीरज सल्होत्रा
(प्रधान अध्यापक)
ठाकुर स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग, मुंबई

ICOMOS इंडिया, एक सदस्यता आधारित संगठन है, जो एक ऐसा मंच प्रदान करता है, जहां सांस्कृतिक विरासत स्थलों और स्थानों के संरक्षण, पुनर्वास और वृद्धि से संबंधित संस्थानों के प्रतिनिधि और क्षेत्र में सिद्धांतों और प्रथाओं पर सूचनाओं और विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए मिल सकते हैं।

पर्याप्त क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए छह क्षेत्रों से सदस्यता ली जाती है। ICOMOS -इंडिया ने सांस्कृतिक विरासत संरक्षण की अपनी चिंताओं का प्रतिनिधित्व करने, अपने राष्ट्रव्यापी सदस्यों के विविध व्यावसायिक हितों की सेवा करने, उनके बीच ज्ञान साझा करने और विरासत प्रबंधन के लिए एक बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए 21 राष्ट्रीय वैज्ञानिक समितियों (NSC) की स्थापना की है। प्रत्येक राष्ट्रीय वैज्ञानिक समिति ICOMOS की संबंधित अंतर्राष्ट्रीय समिति से जुड़ी है।

NSCs ICOMOS की विधियों के अनुसार स्थापित और संचालित होते हैं, और कानूनी और वित्तीय रूप से ICOMOS-

India की कार्यकारी समिति के प्रति जवाबदेह होते हैं। (NSC) राष्ट्रीय वैज्ञानिक परामर्शदाता के माध्यम से कार्य करता है, जो राष्ट्रीय वैज्ञानिक समितियों की गतिविधियों और कार्यक्रमों की निगरानी के लिए और जहां आवश्यक हो सलाह और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। ICOMOS -इंडिया के सभी सदस्य अपनी पसंद के किन्हीं दो (NSC) में शामिल हो सकते हैं। ICOMOS-India वर्किंग ग्रुप (WG) का उद्देश्य ICOMOS इंडिया के भीतर अपने सदस्यता आधार का विस्तार करना और संगठन के भीतर उभरते पेशेवरों के बेहतर एकीकरण को सक्षम बनाना है। ICOMOS इंडिया की कार्यकारी समिति सहित युवा छात्रों, इच्छुक पेशेवरों और वरिष्ठ सदस्यों के साथ सभी स्तरों पर मिलकर काम करना; यह पीढ़ी दर पीढ़ी जुड़ाव को सुगम बनाएगा और ICOMOS की वैज्ञानिक प्रासंगिकता को बनाए रखेगा। यह संस्कृति और स्मारकों के संरक्षण से संबंधित पेशेवरों के राष्ट्रीय स्तर के निकाय से जुड़ने के लिए एक आदर्श मंच है। आप एक स्वतंत्र पेशेवर या एक संस्था के रूप में भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी वेबसाइट icomosindia.com या tsapmumbai.in पर जाकर प्राप्त की जा सकती है।

डॉ कृष्णा चौहान ने एक्ट्रेस तनीषा मुखर्जी को लीजेंड दादा साहेब फाल्के अवार्ड 2021 देकर किया सम्मानित

मुंबई। बॉलीवुड एक्ट्रेस तनुजा की बेटी और काजोल की बहन ऐक्ट्रेस तनीषा मुखर्जी को डॉ कृष्णा चौहान ने लीजेंड दादा साहेब फाल्के अवार्ड 2021 देकर सम्मानित किया। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन डॉ कृष्णा चौहान ने तनिषा मुखर्जी को भगवत गीता भेंट में दिया। तनीषा मुखर्जी ने बताया कि लीजेंड दादा साहेब फाल्के अवार्ड 2021 पाना मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है, मैं इसके आयोजक डॉ कृष्णा चौहान का दिल से शुक्रिया अदा करती हूं।

बता दें कि बॉलीवुड फिल्मों के डायरेक्टर और लीजेंड दादा साहेब फालके अवार्ड के फाउंडर डॉक्टर कृष्णा चौहान ने मेयर हॉल जूहू, मुम्बई में लीजेंड दादा साहेब फालके अवार्ड २०२१ भव्य पैमाने पर आयोजित किया। इस अवार्ड फंक्शन में बहुत सारी सेलेब्रिटीज़ ने शिरकत की। दक्षिण मध्य मुंबई चेम्बूर से शिवसेना सांसद राहुल शेवाले यहां मुख्य अतिथि के रुप में मौजूद रहे। इस पुरस्कार समारोह में दादा साहेब फालके के ग्रैंडसन चंद्रशेखर पुसाल्कर भी चीफ गेस्ट के रूप में मौजूद थे। साथ ही मशहूर संगीतकार अनु मलिक, पद्मश्री अनूप जलोटा, गजेंद्र चौहान, मुकेश ऋषि, एक्टर सिद्धार्थ निगम, अरुण बख्शी, अनिल नागरथ, एक्ट्रेस रागिनी द्विवेदी, नीलम पांडे, दीप्ति तिवारी, गीतकार सुधाकर शर्मा, निर्देशक आलोकनाथ दीक्षित, निर्देशक दिनकर कपूर, ब्राइट आउटडोर के सीएमडी डॉ योगेश लखानी को भी इस पुरस्कार से नवाजा गया। इस अवार्ड फंक्शन के स्पेशल गेस्ट थे साउथ सिनेमा के मशहूर एक्टर सुमन तलवार। इंटरनेशनल सेलेब्रिटी एंकर सिमरन आहूजा ने इस अवार्ड शो को होस्ट किया जबकि इंटरनेशनल परफॉर्मर शीरीन फरीद, जेबा काजी की स्टेज परफॉर्मेंस ने सबका दिल जीत लिया। अवार्ड फंक्शन के बाद भी कुछ हस्तियों को सम्मानित किया गया उनमें तनीषा मुखर्जी, भरत गोराडिया, डॉ योगेश लखानी, हिमांशु झुनझुनवाला, कैलाश मासूम, सन्तोष साहू, अमित मिश्रा, दिलशाद खान और गाज़ी मोइन का नाम उल्लेखनीय है।

उल्लेखनीय है कि केसीएफ प्रेजेंट्स लेजेंड दादा साहेब फालके अवार्ड २०२१ इंडियन सिनेमा का सबसे बड़ा पुरुस्कार है। कृष्णा चौहान की ओर से २६ दिसंबर २०२१ को बोलीवुड लीजेंड अवार्ड २०२१ का आयोजन भी किया जाएगा। बॉलीवुड में अपनी एक अलग पहचान रखने वाले कृष्णा चौहान फिल्म निर्देशक होने के हाथ साथ अवार्ड फंक्शन का आयोजन भी करते रहते हैं। साथ ही वह कृष्णा चौहान फाउंडेशन भी संचालित करते हैं।

गौरतलब है कि तनीषा मुखर्जी फ़िल्मी परिवार से सम्बन्ध रखतीं हैं। काजोल की छोटी बहन तनीषा मुखर्जी एक्ट्रेस नूतन की भांजी भी हैं। तनीषा रामगोपाल वर्मा की फिल्म सरकार में अमिताभ बच्चन और अभिनषेक बच्चन के साथ नजर आई थीं। तनीषा ने यशराज बैनर की फिल्म नील एंड निक्की की थी। तनीषा टीवी शो बिगबॉस सीजन 7 में भी नजर आ चुकी हैं।

9/11 के बाद भी अमेरिकी एयरपोर्ट्स की सिक्यॉरिटी में सेंध, कारतूस के साथ मुंबई पहुंच गए दो यात्री

मुंबई, 9/11 आतंकी हमले के बाद अमेरिका में एयरपोर्ट्स पर कड़े सुरक्षा प्रोटोकॉल बनाए गए हैं। इसके बावजूद सिक्यॉरिटी में सेंध का हैरान करने वाला मामला सामने आया है। तमाम सुरक्षा इंतजामों के बीच दो युवक तीन कारतूस लेकर अमेरिका से मुंबई पहुंच गए। हालांकि पता चला है कि युवकों ने गलती से बैग में कारतूस रखे थे लेकिन इस मामले ने सुरक्षा मानकों को लेकर सवाल जरूर खड़े कर दिए हैं। अटलांटा एयरपोर्ट से कारतूस के साथ मुंबई पहुंच गए अमेरिका के हार्ट्सफील्ड-जैक्सन अटलांटा इंटरनैशनल एयरपोर्ट से दो युवक मुंबई के लिए रवाना हुए। मुंबई एयरपोर्ट पर जब उनके बैगों की तलाशी हुई, तो इनमें यह कारतूस मिले। फौरन उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। एडवोकेट प्रभाकर त्रिपाठी और अवधेश दुबे ने एनबीटी को बताया कि प्रवीण कनकराज और शिब्बू सदाशिवम नामक इन आरोपियों को अंधेरी कोर्ट ने सोमवार तक पुलिस कस्टडी में भेज दिया। दोनों ही आरोपी तमिलनाडु के मूल निवासी हैं। वे अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी के छात्र हैं। प्रभाकर त्रिपाठी के अनुसार, अमेरिका में 18 साल से ऊपर के लोगों को ओपन पे फाइरिंग क्लब में बतौर प्रैक्टिस या शौक के गोलियां चलाने की इजाजत है। इन दोनों युवकों ने भी करीब पांच महीने पहले अमेरिका में ऐसे ही एक क्लब में गोलियां चलाने के लिए कुछ कारतूस खरीदे। वहां बाकायदा गोलियां भी चलाईं। बाद में दोनों युवकों ने वहां यूज किए गए दो कारतूस और जिंदा कारतूस अपनी बैग में रख लिए और उस बात को ये लोग उसी वक्त भूल गए। जब भारत आने के लिए इन्होंने अपने बैग में सामान रखा, तो वे यह कारतूस निकालना भूल गए।

अनदेखा स्वर्ग

हिरल शाह

हाल के वर्षों में यह देखा गया है कि पर्यटक अनदेखी जगहों पर जाने में अधिक रुचि ले रहे हैं। कम पर्यटकों की भीड़ और एक गैर-प्रदूषित वातावरण इस इच्छा का मुख्य कारण है। क्या इस तरह के स्थान केवल भारत के बाहर पाए जाते हैं? भारत में भी ऐसे गंतव्य हैं जो बहुत ही खूबसूरत हैं और बहुत कम लोग इसके बारे में जानते हैं।

राजस्थान में एक ऐसी जगह है जिसके बारे में ज्यादा आबादी को जानकारी नहीं है। हम जयपुर, उदयपुर, जोधपुर की बात नहीं कर रहे हैं। ये स्थान पहले से ही पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं।

हम बात कर रहे हैं एक ऐसी जगह की जो पहाड़ों के बीच में है। जहां ताजी हवा बसती है। जो शहर से न ज्यादा दूर है और न ज्यादा नजदीक। प्राकृतिक सुंदरता से संपन्न यह जिला राजस्थान में उदयपुर के पास स्थित है। यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ आध्यात्मिकता में भी समृद्ध है। जिसका एक इतिहास है और जो धार्मिक मूल्य के लिए भी प्रसिद्ध है। हम बात कर रहे हैं राजसमंद की। इस शहर का नाम राजसमंद झील के नाम पर रखा गया है, जो मेवाड़ के राणा राज सिंह द्वारा 17 वीं शताब्दी में बनाई गई एक कृत्रिम झील है। हालांकि यह एक बहुत ही खूबसूरत जगह है लेकिन यहां पर्यटन बहुत कम है। किले, मंदिर, ऐतिहासिक संग्रहालय और प्राकृतिक सुंदरता इस जगह का मुख्य आकर्षण है।

नाथद्वारा का प्रसिद्ध मंदिर इसी जिले में स्थित है। जहां भक्त श्रीनाथजी भगवान की पूजा करने आते हैं। और नाथद्वारा मंदिर से 35 किलोमीटर दूर एक और प्रसिद्ध एकलिंगजी मंदिर है। इनके साथ-साथ चारभुजा चोराय मंदिर और मजेरा जैन डेरासर भी दर्शनीय स्थल हैं। सांवरिया सेठ मंदिर में भगवान कृष्ण की मूर्ति अपनी तरह का एक चमत्कार है।

राजस्थान भारत के इतिहास में अपने योगदान के लिए प्रसिद्ध है। महाराणा प्रताप जैसे महान राजा हमेशा युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। हल्दीघाटी संग्रहालय में उनकी जीवन शैली और उनकी बहादुरी के बारे में जानकारी दी गई है। यह महाराणा प्रताप संग्रहालय हल्दीघाटी, नाथद्वारा के पास स्थित है। कुंभलगढ़ किले के पास गंगा गोवर्धन संग्रहालय देखना न भूलें। यहां हथियारों, मूर्तियों, पेंटिंग, कागजी मुद्रा, 5000 से अधिक भारतीय सिक्कों का उत्कृष्ट संग्रह है।

कुंभलगढ़ का किला यहां का सबसे बड़ा पर्यटक आकर्षण है। किले ने इतिहास में चीन की महान दीवार के बाद दूसरी सबसे बड़ी दीवार के रूप में अपनी पहचान बनाई है। एकलिंग जी के पास देलवाड़ा गांव में एक और अनदेखा किला है। इसे देवीगढ़ किले के नाम से जाना जाता है। आप इन किलों में अपने परिवार के साथ रह सकते हैं और सबसे यादगार समय बिता सकते हैं।

अंत में गोमती पर बनी प्रसिद्ध राजसमंद झील की यात्रा करना न भूलें। यह 4 मील लंबी और 60 फीट गहरी झील है जिसे 1660 में राणा राज सिंह ने बनवाया था।

हमें विदेशी देशों की यात्रा करने के अपने उत्साह के साथ-साथ अपने देश में स्थलों की यात्रा करने में अधिक गर्व महसूस करना चाहिए।

यहाँ कैसे पहुँचे?

उदयपुर रेलवे स्टेशन या हवाई अड्डा यहां पहुंचने का सबसे अच्छा तरीका है।

आपको किस मौसम में इस जगह पर जाना चाहिए?

इस जगह को देखने के लिए सर्दियों का मौसम सबसे अच्छा होता है।

सीबीआई का रिपोर्ट कार्ड तैयार करेगा सुप्रीम कोर्ट, पूछा- कितने मुकदमों में सजा दिलवाई, बताइए

नई दिल्ली, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो की लापरवाही से सुप्रीम कोर्ट नाराज है। अदालत ने सीबीआई का रिपोर्ट कार्ड तैयार करने का मन बनाया है। जस्टिस संजय किशन कौल और जस्टिस एमएम सुंद्रेश की बेंच ने कहा कि केवल केस दर्ज कर लेना ही काफी नहीं है। सीबीआई को जांच करके यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि अभियोजन पूरा हो। अदालत CBI की परफॉर्मेंस और जांच तथा मामलों को लॉजिकल एंड तक ले जाने में उसके सक्सेस रेट को भी देखेगी। शुक्रवार को अदालत ने सीबीआई निदेशक से उसके सामने उन मामलों की संख्या रखने को कहा जिनमें सीबीआई आरोपी को सजा दिलाने में सफल रही। सुप्रीम कोर्ट सीबीआई की प्रॉसीक्यूटिंग विंग अपने काम में कितनी कुशल है, इसकी जांच कर रहा है। शीर्ष अदालत ने पहले पाया था कि सीबीआई अपने काम में बहुत लापरवाही कर रही है जिसके चलते अदालतों में मुकदमे दायर करने में बेवजह की देरी होती है। अदालत ने सीबीआई निदेशक से इसपर जवाब मांगा था।

बिहार में बाढ़ से तबाही का जायजा लेने 6 सितंबर को आ रही छह सदस्यीय केंद्रीय टीम, प्रभावित जिलों का करेगी दौरा

पटना। बिहार में बाढ़ से हुए नुकसान का जायजा लेने के लिए सोमवार को केंद्रीय टीम आ रही है। गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव राकेश कुमार सिंह के नेतृत्व में आ रही छह सदस्यीय यह टीम 8 सितंबर तक बिहार के बाढ़ प्रभावित जिलों का दौरा करेगी। पटना आने के बाद आपदा प्रबंधन विभाग के साथ टीम की बैठक भी करेगी। बिहार सरकार ने केंद्र सरकार से टीम भेजकर बाढ़ से नुकसान का आकलन कराने का आग्रह किया था। उसके बाद केंद्र सरकार ने टीम का गठन किया जो सोमवार को पटना पहुंचकर यह तय करेगी कि उन्हें किस बाढ़ प्रभावित इलाके में हुए क्षति का आकलन करना है। इस बार केंद्रीय टीम के कार्यक्रम के अनुसार ही राज्य के अधिकारियों को रूट तय करना है। सोमवार को केंद्रीय टीम के पहुंचने के साथ ही आपदा प्रबंधन सहित संबंधित अन्य सभी विभागों के सीनियर अधिकारियों के साथ एक बैठक होगी। इस बैठक में बिहार सरकार की ओर से बाढ़ से हुए नुकसान के विषय में केंद्रीय टीम को जानकारी दी जाएगी।

केंद्रीय टीम द्वारा दो दिनों तक बिहार में रहकर बाढ़ से हुए नुकसान का जायजा लिया जाएगा। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में हुए नुकसान का आकलन करने के बाद केंद्रीय टीम वापस पटना लौट कर दोबारा राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ बैठक करेगी।

अब दिल्ली और लखनऊ के बीच भी होगी सस्ती आरामदायक यात्रा

नई दिल्ली, अब दिल्ली और लखनऊ के बीच भी अब एयरकंडीशंड ट्रेन की सस्ती यात्रा हो सकेगी। दरअसल, रेल मंत्रालय ने नई दिल्ली से लखनऊ के बीच चलने वाली एसी एक्सप्रेस स्पेशल में नए 3 टीयर एसी इकोनॉमी कोच जोड़ने का फैसला किया है। यही नहीं, दोनों शहरों के बीच चलने वाली लखनऊ मेल स्पेशल (Lucknow Mail Special) में भी इस तरह के दो डिब्बे जोड़े जाएंगे। एसी एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन में आगामी 10 सितंबर से ये कोच लग जाएंगे जबकि लखनऊ मेल स्पेशल में आगामी 15 सितंबर से ये कोच जोड़े जाएंगे। इस कोच के लिए टिकटों की बुकिंग शुरू हो गई है। एसी एक्सप्रेस में अगले शुक्रवार से नए कोच रेल मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि नई दिल्ली से लखनऊ के बीच चलने वाली 02429 स्पेशल एसी एक्सप्रेस में आगामी 10 सितंबर से एसी 3 टीयर इकोनॉमी कोच लगाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इस ट्रेन के लिए बुकिंग शुरू हो गई है। इसके साथ ही लखनऊ से नई दिल्ली के बीच चलने वाली 02229 और 02230 लखनऊ मेल स्पेशल में भी इस तरह के दो डिब्बे लगाए जाएंगे। ये डिब्बे आगामी 15 सितंबर से जोड़े जाएंगे। प्रयागराज जयपुर एक्सप्रेस स्पेशल में परसों से चलेंगे ये कोच रेल मंत्रालय ने हाल ही में घोषणा की थी कि नए 3 टीयर इकोनॉमी कोच को उत्तर मध्य रेलवे की एक ट्रेन में जोड़ा जाएगा। उसके बाद सूचना आई कि आगामी 6 सितंबर से 02403 प्रयागराज जयपुर एक्सप्रेस स्पेशल में ये डिब्बे जोड़े जाएंगे। इस ट्रेन के लिए बुकिंग शुरू हो गई है। इस कोच में 11 बर्थ ज्यादा रेलवे का दावा है कि जर्मन तकनीक के एलएचबी प्लेटफार्म पर विकसित किए गए नए एसी 3 टीयर इकोनॉमी कोच कोच को बेहद नफासत से बनाया गया है। इसलिए ये कोच पुराने एसी 3 टीयर कोच के मुकाबले ज्यादा आरामदेह हैं।

यह हिन्दी साप्ताहिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक - दिलीप नानजीभाई पटेल द्वारा 403, बिल्डिंग नं.1, रोशन नगर, एस.आर.ए, सी.एच.एस. लि. नियर गणेश मंदिर, ओशिविरा जोगेश्वरी (प्र) मुंबई 400102 से मुद्रित कर एस.आर. पब्लिकेशन एवं प्रिंटींग प्रेस, गाला नं.8/9/10, नीयर घरातन पाड़ा ऑपोजिट रामेश्वरम बिल्डिंग, वैशाली नगर लास्ट बस स्टोप टाईटल फ्रंट, दहिसर (पूर्व), मुंबई 400068 से प्रकाशित किया गया है। संपादकः दिलीप नानजीभाई पटेल,
उप संपादकः किरीट अमृतलाल चावड़ा RNI No. MAHHIN/2020/78591 Mob: 7666090910 / 9574400445 Email : mumbaitarang@gmail.com / pateldilipuk2014@gmail.com वाद-विवाद का क्षेत्र मुंबई होगा।